शान्ति सुमन

मूल नाम-शान्ति लता

जन्म-15 सितम्बर, 1942

जन्म स्थान-कासीमपुर, जिला-सहर्षा, उत्तर बिहार

शिक्षा-एम॰ए॰, पीएच॰डी॰

हिन्दी मे प्रकाशित कृति-गीत संग्रह :

ओ प्रतीक्षित, परछाई टूटती, सुलगते पसीने,
पसीने के रिश्ते, मौसम हुआ कबीर, तप रहे कँचनार,
भीतर-भीतर आग, पंख-पंख आसमान,
नदी का हँसना (प्रकाश्य)
समय चेतावनी नहीं देता (कविता संग्रह)

उपन्यास-जल झुका हिरन

आलोचना-मध्यवर्गीय चेतना और हिन्दी का आधुनिक काव्य

सम्पादन-सर्जना, अन्यथा, भारतीय साहित्य, कन्टेम्परी इन्डियन लिटरेचर (दिल्ली), बीज (पटना), देशक प्रमुख साहित्यिक पत्रिका सभ मे रचना प्रकाशित एवं अनेक आकाशवाणी तथा दूरदर्शन केन्द्र सँ प्रसारित। गणतंत्रक पूर्व संध्या पर सर्वभाषा कवि सम्मेलन (दिल्ली) मे तमिल कविताक हिन्दी मे अनुवाद-पाठ।

सम्मान पुरस्कार-बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना सँ साहित्य सेवा सम्मान सँ सम्मानित एवं पुरस्कृत, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग सँ कविरत्न सम्मान, बिहार सरकारक राजभाषा विभाग द्वारा 'महादेवी वर्मा सम्मान' सँ सम्मानित एवं पुरस्कृत। अवन्तिका (दिल्ली) द्वारा विशिष्ट साहित्य-सम्मान, मैथिली साहित्य परिषद सँ विद्या वाचस्पतिक सम्मान, हिन्दी प्रगति समिति द्वारा भारतेन्दु सम्मान, नारी सशक्तिकरणक उपलक्ष्य मे सुरंगमा-सम्मान, विंध्यप्रदेशक 'साहित्य-मणि सम्मान' आदि।

सम्प्रति-पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, महन्त दर्शनदास महिला महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

सम्पर्क-'ईशान', मिठनपुरा, क्लब रोड (वी॰ सी॰ गली), रमना, मुजफ्फरपुर-842002,
दूरभाष-0621/2270895, मो॰-3105530

ISBN : 81-88584-24-X

अभिधा प्रकाशन

मेघ इन्द्रनील

शान्ति सुमन

मेघ इन्द्रनील

शान्ति सुमन

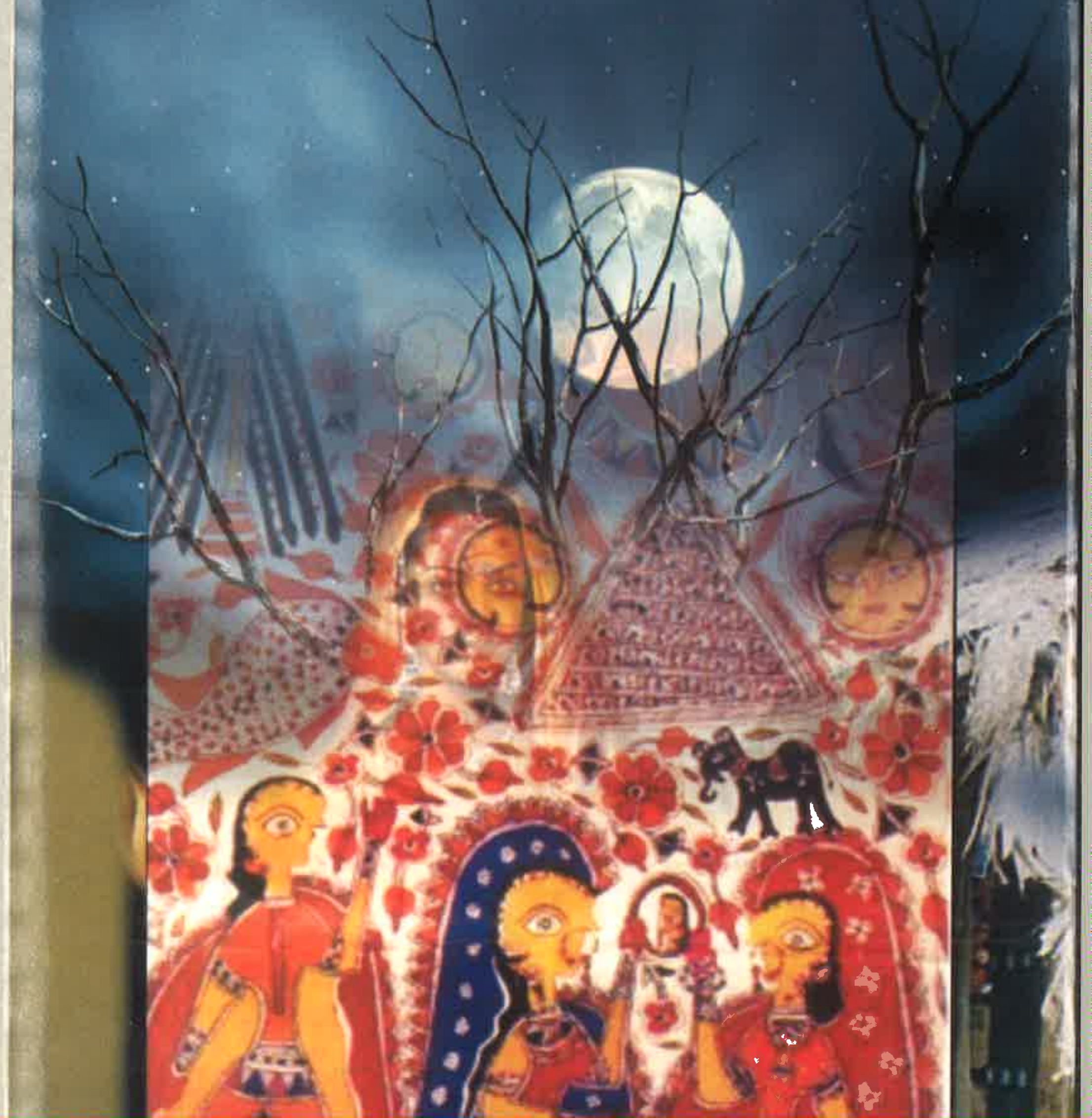

एहि संकट सँ भरल समय मे जखन प्रौढ़ लोक कोनो निर्णय लेबाक स्थिति मे नहि होइछ, वयस्कक आगाँ मे जिनगीक प्रलोभन, विकल्प आ मोहभंग सेहो दिशा-शून्यक स्थिति उत्पन्न केने छैक आ बच्चा सभ खुलिक' हँसि नहि पबैत अछि, तखन एक सशक्त रचनाकार ओहि कुहेसकें चीरिक' अपन समय, समाज आ साहित्य सँ सकारात्मक सम्बन्ध जोड़ैत अछि। कहय चाहैत छी जे **शान्ति सुमन** एहि समय, समाज आ जिनगीक भागमभाग मे आकंठ डूबल लोकक संकल्प-संघर्षक गीत कवयित्री छथि । हिनक अन्तर्मन मे संवेदनाक एक अक्षय नदी बहैत अछि जकर अभिव्यक्तिक आकुलता **शान्ति सुमनक** गीत मे देखल जाइत अछि । एक दिस एहि गीत सभ मे समकालीन समाजक विसंगति प्रभावीरूप मे देखा पड़ैत अछि । व्यवस्थाक बहुत भीतर जाक' ओकर विद्रूप चित्र खींचल गेल अछि । दोसर दिस प्रकृति आ मिथिलाक माटीक संग समस्त देशकोसक रूप-रस-गंध सँ रचल, जिनगीक छोट-छोट खुशी आ सुख सँ उमड़ल, पुनः अन्याय आ भ्रष्टाचार सँ दमित-पीड़ित आ उकछल गाम-घर-आंगन, लोक-वेद आओर अपन पास-पड़ोसक संसार मे पसरल निम्नमध्यवर्गीय प्रेम, आकर्षण तथा जिनगीक सुख-दुख, राग-विराग, आशा-आकांक्षा, चिन्ता-लाचारी, हास-रुदन, दिनानुदिन पातर होइत

Scanned by CamScanner

एहि सं
प्रौढ़ लोक कोनो
होइछ, वयस्कक
विकल्प आ मोह
उत्पन्न केने छैक
नहि पबैत अछि,
ओहि कुहेसकें
आ साहित्य सँ सव
कहय चाहैत छी
समाज आ जिनगी
लोकक संकल्प-स
हिनक अन्तर्मन मे
बहैत अछि जकर
सुमनक गीत मे दे
एहि गीत सभ मे
प्रभावीरूप मे देख
बहुत भीतर जाक'
गेल अछि । दोसर
माटीक संग समस्त
रचल, जिनगीक छं
उमड़ल, पुनः अ
दमित-पीड़ित आ
लोक-वेद आओर
मे पसरल निम्नमध्य
जिनगीक सुख-दुख,
चिन्ता-लाचारी, हास-

मेघ इन्द्रनील

(मैथिली गीत संग्रह)

मेघ इन्द्रनील

शान्ति सुमन

अभिधा प्रकाशन

मूल्य	:	100 रुपये
©	:	**लेखकाधीन**
द्वितीय परिवर्धित संस्करण	:	2005
प्रकाशक	:	**अभिधा प्रकाशन**
कार्यालय	:	रामदयालु नगर, मुजफ्फरपुर - 842002
वितरक	:	ईशान प्रकाशन, मीठनपुरा, क्लब रोड, मुजफ्फरपुर
दिल्ली सम्पर्क	:	151, देवली गाँव मेन बस स्टैण्ड, प्रथम मंजिल, नई दिल्ली - 110062
अक्षर-संयोजन	:	**अजीत कुमार वर्मा**
आवरण	:	**अमिताभ राय**
मुद्रक	:	बी० के० ऑफसेट, दिल्ली - 32

Megh Indraneel (Maithili Lyrics)
By **Shanti Suman**

दू शब्द

ई बड़ हर्षक बात अछि जे सामा-चकेबा फाउन्डेशन, बम्बई एकटा आरो पोथीक प्रकाशन कऽ रहल अछि । ई मौलिक काव्य संग्रह अछि–जकर रचयिता छथि डा० शान्ति सुमन ।

प्रत्येक भाषाक अपन काव्य-परम्परा होईत छैक आ मैथिली भाषाक सेहो अपन काव्य-परम्परा अछि । ई अत्यन्त प्राचीन अछि । एहि काव्य-परम्पराक स्तम्भ-पुरुष छलाह–विद्यापति । हुनकर काव्य-चेतनाक अपन विशिष्टता छल । ओ छल हुनकर भाव-माधुर्य आ तकरा अभिव्यक्तिक लेल उपयुक्त स्वर-लहरीक चयन । दूनू मिल क' हुनक काव्य-चेतना कें व्यापक एवं मर्मस्पर्शी बना देलक । सबसँ पैघ बात जे हुनक कथ्य मिथिलाक माटि-पानि मे सानल छल । आ तें आई धरि काल ओहि माधुर्य पर खरोंच तक नहि लगा सकल अछि । कहक तात्पर्य एतबे जे वैह काव्य समयक पाँखि पर असवार भ' युग-युग कें अनुप्राणित क' सकैत अछि जकर कथ्यक जन्म ओहिठामक माटि-पानि सँ भेल हो–वैह काव्य सांस्कृतिक उद्‌गाता भ' सकैत अछि । विद्यापति एकर प्रमाण छथि । हुनक काव्यक माधुर्य, भाव-बोधक विशिष्टता एखनहु तक अनुप्राणित कर' मे सक्षम अछि । विद्यापतिक बाद मिथिला मे ओहेन प्रतिभा-सम्पन्न, अपन माटि-पानिक तासीर कें बूझ'बला कवि नहि भेलाह । एकर अर्थ ई नहि जे कवि भेवे नहि केलाह या कविता लिखले नहि गेल । कवि भेलाह, कविता लिखल गेल । परंच ओहिमे मिथिलाक माटि-पानिक वेदना-मिठास, सुख-दुखक तासीर नहि भेटत । भेटत वर्णनात्मक काव्य, किछु तथ्यात्मक तुकबंदी, किछु फकरा, किछु हास-परिहास । किछु मोट-मोट बात कें कविताक नाम देल गेल । कहक तात्पर्य जे काव्यक आत्मा जेना बिला गल हो–रहि गेल ओकर बाहरी अवयव, कंकाल मात्र । परंच ई अवस्था बहुत दिन नहि रहल । युग बदलल आ ताहि संगे युगक मानसिकता सेहो । अखबार, रेडियो, टेलीविजन, आ पोथी सबहक प्रकाशन व्यक्ति आ समाज कें बदलि रहल अछि । सामाजिक रीति-नीति, तीज-त्यौहार, रहन-सहन, तौर-तरीका ओकर मूल्यगत

संरचना सभ बदलि रहल अछि । आ शनैः-शनैः व्यक्तिक मानसिक धरातल विस्तृत भ' रहल अछि । ओकरा एकटा नवीन दृष्टिकोण भेटलैक । एहि दृष्टिकोण सँ ओ सामाजिक पीड़ा कें नवीन रूप मे देख' लागल । बुद्धिजीवी कवि, लेखक कें ई नवीन दृष्टिकोण एक दुरबीनक भाँति उपयोगी भेल । ओ लोकनि व्यक्ति आ समाजक पीड़ाक भावात्मक चितेरा बनि गेलाह । मैथिली काव्य-परम्परा सेहो एहि युग-सत्यक बदलैत मानसिकता कें आत्मसात कर' मे अग्रसर भेल । ओना त' बहुतो कवि एहि बदलैत मानसिकताक चित्रण अपना काव्य मे कयलनि अछि—परंच किछु नाम उल्लेखनीय अछि । ई छथि यात्री, राजकमल, भुवन, जयनारायणा मल्लिक, रामकृष्ण झा 'किसुन', मायानन्द मिश्र आदि ।

प्रस्तुत काव्य-संग्रह मे सेहो आंशिक रूप मे एहि युग-सत्यक बदलैत मानसिकता कें चित्रित करबाक प्रयास कवि केलनि अछि । एहि संग्रहक अधिकांश कविता मिथिलाक माटि-पानि मे सानल अछि । मिथिलाक घर-गृहस्थी, बारी-आंगन, जन-जीवन, खेत-पथार, पावनि-तिहार, प्यार-दुलार, अमीरी-गरीबी, घृणा-उपेक्षा आदिक चित्रण बड़ सटीक बनि पड़ल अछि । एकरमात्र वर्णन करब कवि कें अभिप्रेत नहि—एहि अमूर्त भाव कें पाठकक समक्ष ठाढ़ करब कविक ध्येय छनि । आजुक जटिल आ नकारात्मक जीनगीक प्रभाव छोड़ब—एहि कविताक स्वर अछि । एहिमे व्यक्त पीड़ा-टीसक तीव्रता सँ पाठक समाजक पीड़ाक अनुभव क' सकथि आ ओकर उल्लास सँ उल्लसित ! बस । तकर अभिव्यंजने टा कविक प्रयोजन छनि । भाव-पक्ष बड़ सहज, सरल एवं मर्मस्पर्शी अछि । एहि मे आजुक जीवनक आर्थिक पीड़ा, भयावहता, संत्रास, घुटन, टुटन, कुंठा एवं जिजीविषाक छिट-पुट चित्र भेटैत अछि । ई मात्र देखल चित्र नहि—वरन भोगल चित्रक बोध करा रहल अछि । ओना ई काव्य-संग्रह वर्णनात्मक परिपाटी सँ पूर्णतया मुक्त नहि भ' सकल—परंच एहन कविता संख्यामे बहुत कम अछि । एहि मे रूपक, उपमा, उपमान, अलंकारक प्रयोग नवीन रूप मे भेल अछि । कतहु-कतहु लोक-गीतक चासनी मे कविता कें अप्रतिम सौंदर्य प्रदान कयल गेल अछि । द्रष्टव्य अछि :

काजल ले लिखल पत्र आँचर केर नाम
सहज भेल मोनक बोझ नोर भेल विराम ।

ई कविता संगह मैथिलीक कविता कें नव पृष्ठभूमि सँ जोड़' मे सक्षम होएत । सामा-चकेबाक सदस्य लोकनि साहित्यिक गतिविधि मे अधिक रुचि रखैत छथि । ई प्रशंसनीय अछि । ई लोकनि एक भाव सँ साहित्य आ साहित्यकार कें अग्रसर कर' मे लागल छथि । साहित्यक सृजन आ पाठक-वर्गक निर्माण एकर खास उद्देश्य अछि । आशा अछि जे सामा-चकेबाक एहि उद्देश्य मे मैथिल समुदाय अपन सहयोग द' एकर फाउन्डेशन कें आओर पोख्ता बनाब' मे सहायक होएताह ।

प्रा० गोविन्द झा
अध्यक्ष
हिन्दी विभाग
नरसी मोनजी कॉलेज
(बम्बई विश्वविद्यालय सँ सम्बद्ध)

प्रसंगवस

'मेघ इन्द्रनील' पहिल बेर 1991 मे सामाचकेवा फाउन्डेशन, 61/4 मुलंड कालोनी, बम्बई-400082 सँ प्रकाशित भेल छल । श्री हीरेन्द्र झा ग्राम–विश्वनाथपुर तरौनी, एक विशिष्ट उद्योगपति बम्बई अपन पितामह एवं अपन पिताक स्मृति मे एहि कविता-संगह कँ प्रकाशित करौने छलाह । संग्रह मे गीतक समानान्तर चित्राकृतिक रचना कलाकार श्री अकु झाक रंग आ तूलिका सँ भेल छल ।

आइ पुनः **'मेघ इन्द्रनील'** दोसर संस्करणक रूप मे प्रकाशित भ' रहल अछि । एहि मे एकर प्रथम संस्करण मे प्रा० गोविन्द झा, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, नरसी मोनसी कॉलेज (बम्बई विश्वविद्यालय सँ सम्बद्ध) द्वारा लिखित दू शब्द अविकल रूप मे देल जा रहल अछि ।

प्रसंगवस कहय चाहैत छी जे मैथिली कविता विशेषतः गीत मे बदलावक स्थिति बड़ मद्धिम रहल अछि । आधुनिक मैथिली गीत-साहित्य मे यात्री, सोमदेव, मायानन्द मिश्र, वियोगी, विभूति आनन्द आदि गीतकारक रचना मे निम्न मध्यवर्ग आ निम्न वर्ग-खेतिहर-किसान-मजूरक जीवनक यथार्थ तापक अभिव्यंजना भेल अछि । कविता मे एहि तरहक अभिव्यक्ति रमानन्द रेणु, मार्कण्डेय प्रवासी, गंगेश गुंजन, उदयचन्द्र झा, 'विनोद', भीमनाथ झा, उपेन्द्र दोषी आदिक रचना मे देखल जा सकैत अछि । प्रीति तत्व मैथिली कविता आ गीतक मुख्य धारा मे जुड़ल अछि । जीवनक बहिरंगक अनेकान्त चित्रण करबाक संग एहि मे लोकक अन्तरंग जीवनक धार अप्रतिहत रूप सँ प्रवाहित अछि । सामन्तवादी-पूँजीवादी अवरोधक कारणें समाज सँ शोषण, दमन, अत्याचार आदि तिरोहित नहि भेल अछि । असहज स्थितिक सामना करैत कवि-गीतकार सहज रचनाक संभावना मे लागल छथि ।

प्रेम आ शृंगार मैथिली मे आबो लिखल जा रहल अछि, मुदा ओ विद्यापतिक अभिव्यक्तिक शैली सँ बहुत अलग आ विशिष्ट भ' रहल अछि समकालक यथार्थक ताप आ दबाब ओकरा अनुशासित क' रहल अछि । कवि-गीतकारक संवेदना एहि ताप आ दबाब सँ निस्पृह आ तटस्थ नहि रहि सकैत छैक ।

नगरीय आ महानगरीय चेतना सँ एकमेक भ' गेलाक बादो मिथिलाक गाम-घर मे बहत किछु बचल रहि जाइत छैक जे बदलैत नहि छैक । अपन मूल रूप मे एखनहु मिथिलाक गाम-घरक भीत पर लिखल मीन-मजूर, पोखरि मे पसरल माछ आ मखान, बाड़ी मे लतरल पान, सिद्धान्त आ विवाह मे माथ पर सजल लाल पाग, बटगवनी आ सामा चकेबाक गीत आदि कतेको सामाजिक-सांस्कृतिक पहिचान कें मिथिला अपन मैथिली मे जोगेने अछि । तेँ हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाक समानान्तर अभिव्यक्ति मुक्त भेलाक बादो मैथिली गीत-कविता अपन विलक्षण परम्परा आ पहिचान सँ पृथक नहि भ' रहल अछि । ई मैथिली गीत-कविताक विशिष्टता थीक जे ओ कहियो अपन जड़ि सँ विच्छिन्न नहि भेल अछि । अपन विरासत कें सम्हारि ओ अपन आगामी भूमिकाक तलाश मे संलग्न अछि । अपन जड़ि सँ सम्बद्ध रहब समय सँ विच्छिन्न भेनाय नहि होइत छैक अपितु ओहि मे एक आत्मीय जुड़ाव, आन्तरिक सम्पन्नता आ गतिमान समयक पदचाप सुनबाक संभावना सेहो होइत छैक । अपन समय आ समाज कें मैथिलीगीत निरन्तर लिख रहल अछि ।

मैथिली गीत अपन बुनियादी विरासत सँ जुड़ल रहिकऽ अपन सामाजिक सरोकार अधिक तेज करैत आवश्यक भेला पर समयक अतिक्रमणक सेहो क' रहल अछि । केवल असंतोष नहि व्यक्त कए ई व्यंग्यक आश्रय ल' रहल अछि आ विसंगत परिस्थिति पर प्रहार सेहो क' रहल अछि । **'मेघ इन्द्रनील'**क गीत मे ई सहज द्रष्टव्य छैक ।

एहि संग्रहक गीत मे पोखरि, माछ-मखानक आसंगक संग समकालीन जीवन जतय टूटल, दूखल आ पराजित भेल अछि, तकर साक्षी शब्दक उपस्थिति सँ रचनाक दायित्व पूरा भेल अछि । संभव अछि, एहि मे गीतक धार अविच्छिन्न रूप मे भेटय ।

आकाशवाणी पटना मे चौपाल आ भारतीक कार्यक्रमक अनुबंधक फलस्वरूप **'मेघ इन्द्रनील'**क कतेको गीतक रचना भेल । आकाशवाणी मे आइयो एकर सस्वर पाठ सुरक्षित होएत । गेयता एहि सभ गीत मे अनुस्यूत अछि ।

यात्री सँ मैथिली मे जे गीतक परम्परा प्रारम्भ भेल अछि ओहि मे नहि सिरिफ मिथिला अपितु सम्पूर्ण देशक समाज आ समय ध्वनित भ' रहल अछि । सामाजिक सरोकार सँ बन्हल मानवीय संवेदनाक चित्रण **'मेघ इन्द्रनील'** मे बहुत रास भेटत । ई कहब प्रासंगिक अछि जे प्रथम संस्करणक गीतक अतिरिक्त एहि मे आओर गीतक उपस्थिति भेल अछि । ओ गीत सभ एहि लेल जोड़ल गेल जे मैथिली गीत-साहित्य मे हमर रचना अपन पक्ष राखि सकय ।

एक निम्न मध्यवर्गीय किसान परिवार मे जन्म लेबाक कारणें हमर अवचेतन मे गाम-घरक माटि-पानि लिखा गेल अछि । हम ओहि सँ कहियो अलग नहि भ' सकैत छी । तेँ हमर रचना मे गाम-घरक संस्पर्श रहैत अछि । हम अपन ग्राम्य चेतना सँ मुक्त नहि भ' सकैत छी । अपन एहि अनुरागक लेल मैथिली मे ई गीत संग्रह प्रस्तुत अछि । सम्प्रति अपन आशा-आकांक्षाक संग अपनेक विचारक लेल हम प्रतीक्षित छी ।

शान्ति सुमन
25 फरवरी 2003

'ईशान'
मीठनपुरा, क्लब रोड, रमना
मुजफ्फरपुर-842002
दूरभाष : 2270895
मो० : 3105530

अनुक्रमणिका

1. बेटीक लेल एक गीत
2. नदी आ पहाड़
3. नीक लागै छी
4. जेना हमर माय
5. घर-बहार
6. एतेक भोरे-भोरे
7. बरखा
8. परती जे तोड़य
9. सहर धोआँ बुनने
10. लाल सिनूर
11. गंगा : मजदूरिन बेटी
12. मेघ इन्द्रनील
13. गुलाब नहिं रोपब
14. सूखल कचनार
15. जिनगी
16. झर-झर साओन
17. हमर आंगन मे
18. अप्पन गाम
19. आँखि बनल कान
20. बौआक अबैया
21. कतेक दिन पर
22. गीत-गीत भेल
23. भ गेलहुँ पलास
24. गामक लोक
25. चानन-वन
26. अहाँकेर बिन
27. ऋतु वृन्दावन
28. होरी मे
29. एक डारि छाँह
30. गामक कुशल
31. आँखिक मोहर
32. सुनगैत बारह मास
33. लाल काका
34. चम्पाक गीत
35. साँझक निसान
36. एक इहो दिन
37. चिट्ठी घुरल वसंत
38. कँचनारी छाँह
39. आँचर केर नाम
40. करविल नहिं फूलल
41. फागुन केर दिन
42. लाल मेघ
43. पूसक बादरि
44. सुन्नर नैनी माछ
45. हँसी आओर नीन
46. जागल आगि
47. बारह सालक बच्चा
48. हमरे नाम
49. पुरइन-ताल
50. एक-दू-तीन
51. एतेक सुख एके संग
52. आजुक रौद
53. पँखुरीक धार
54. पाखी दिन
55. पलासवन दहकय
56. कूसक वन मे
57. मेघ महँक रंग
58. किताब मे लिखल

59. गरम-गरम भात
60. शालीनाक हँसी
61. अहाँ पुल जकाँ
62. अबीरक दोहा
63. तूर जकाँ भीजल
64. आँखि मे जिनगी
65. रितुक रंग
66. छोट-छोट खुशी
67. निशि बीतल
68. हम खेतिहर-मजूर
69. आँखिक अकास
70. गामक लोक
71. अँखुवाएल फसिल
72. पानिक धार
73. इन्द्रधनुषी छोर
74. प्रतीक्षाक पूस
75. हँसीक पाँखि
76. उजरल प्रतीक्षा
77. फूलक ओहय अर्थ
78. रोशनीक लकीर
79. टूटैत नीन
80. जिनगी मुक्त होएत
81. फागुनक रथ
82. सुन्नर नयन
83. मौनी में लाल चम्पा
84. जिनगीक लेल
85. तामस उमड़ल धार
86. धार पर रोशनी
87. भीजल मुस्कान
88. इजोतक अन्हार
89. माँजल हँसी
90. जिनगीक बात
91. बच्चाक हँसी

अजस्त्र स्नेह सँ
पौत्री

आंकीक

(शालीना वर्मा)

सोलहम आ नातिन

यशीक

(श्रेयसी वर्मा)

नवम जन्मदिन पर

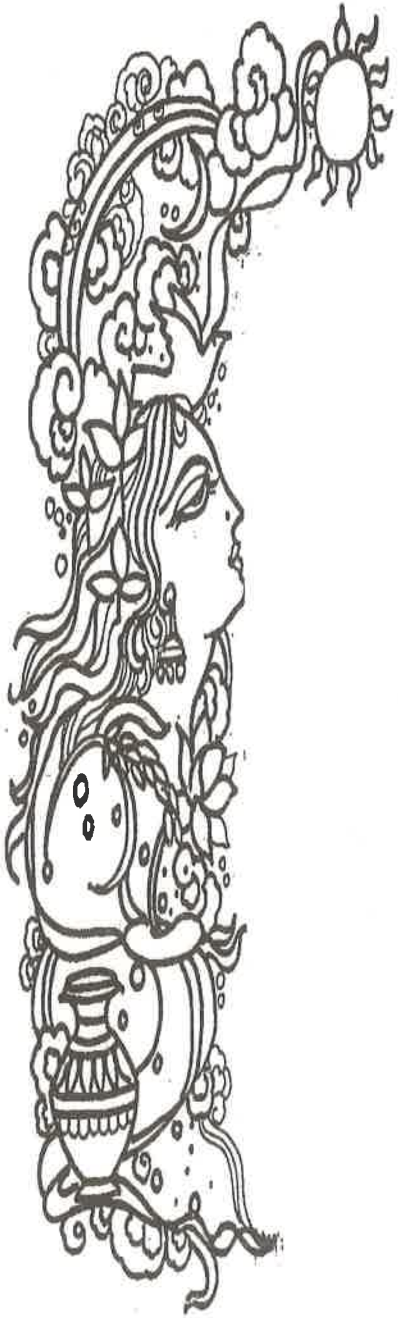

बेटीक लेल एक गीत

बेटी तोर सपना मे एक इन्द्रधनुष
पैरे-पैर उतरय, गोरे गोर उतरय
तोहर नीन मे चिरैयक पाँखि उड़य
एक गीत के किरिन भोरे भोर उचरय
एक जंगल लाल बिरिछ सँ भरल
अरिपन काढ़ल चौमुख पोखर
रोटी सँ लुबधल डारि-डारि
पुरइन संग झलमल बड़-पीपर
तोहर फ्राकक जेब मे अनार भरल
करविलक लाल टहनी गमकय
हरियर धानक ओ काँच सीस
दूधक आखर पोरे पोर सगुनय
तोर तरहथ बहय अकासगंगा
रोसनीक नदी ने कहियो सूखय
तीसी-जौ-गहुमक खेत-खेत
दुनू चान-सुरुज एकटक देखय
बेटी तोर आंगुर सँ रचल कविता
आँखिक उदास पाँतर परसय
तोर देहक गंध पहिर देहरी
हरदम लागय जे तिहार बरसय
तोहर हँसी नहाएल हवा बहत
फर-फर उड़ियाएत रिबन लाल
देखितहि जरि जाएत दुखक बोन
नवका दिन भेटत कमल-ताल
बेटी तोर संघर्षक माँजल मन
सोनक कलसी झलमल झलकय
जेना बाढ़य मौसम, रौद, गाछ
ओहिना आँखिक आशा निखरय

●

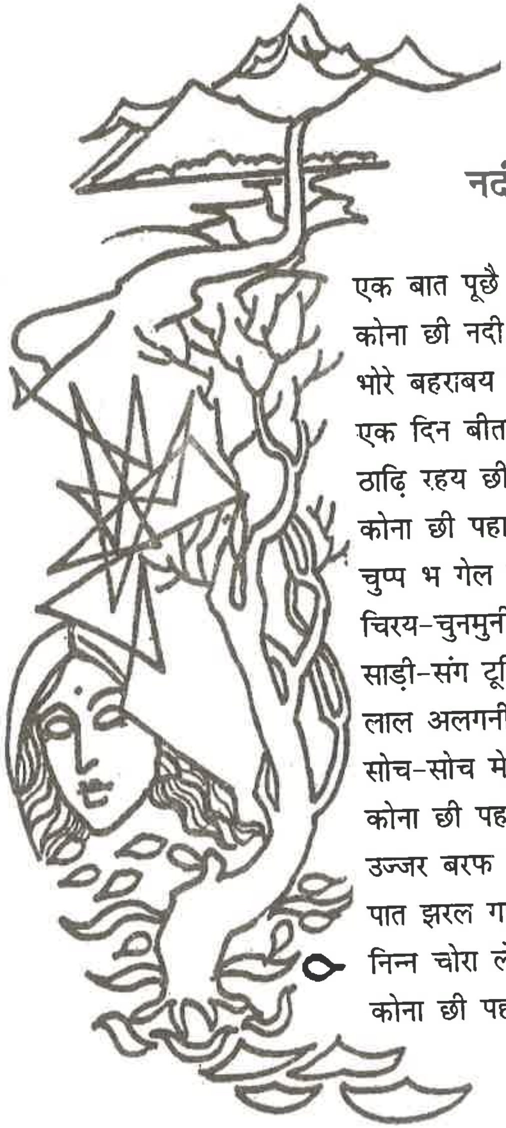

नदी आ पहाड़

एक बात पूछै छी
कोना छी नदी, कोना छी पहाड़ !
भोरे बहराबय छी, रौद भागि जाइत ए
एक दिन बीतय, एक मोह-जाल टूटय ए
ठाढ़ि रहय छी जेना छाँह बिन महार
कोना छी पहाड़ !
चुप्प भ गेल बाजि-बाजि
चिरय-चुनमुनी
साड़ी-संग टूटि गेल
लाल अलगनी
सोच-सोच मे दोहरय पानि आ पठार
कोना छी पहाड़ !
उज्जर बरफ मे डूबल अछि अपन हाथ
पात झरल गाछ जँका भऽ गेल संग-साथ
निन्न चोरा लेलक हमर माथक ओहार
कोना छी पहाड़ !

●

नीक लागै छी

अहाँ फूल नहिं छी, नदी सेहो नहिं छी
अहाँ ओहिना नीक लागै छी
पँखड़ी तोड़ैत दिन जखन डूबय
देह अहँक ताजमहल सन लागय
असमान रुइया सन धुनल-धुनल
मोन वंशी पर देश-राग बनि जाए
सुरुज पिघलैत बीच आंगन मे
रोशनी रंग मे डुबाबय छी
नदी-किनार लग ठाढ़ गाछ जकाँ
दिन-मास जोड़ैत आंगुर पर
हमर आँखि चिरैयक डेन बनल
आँचर मे गुच्छ-गुच्छ गुलमोहर
काँच पिघलैछ आँच पर जहिना
मोन मे सात सुर जगाबै छी
जखन-जखन देखी अहाँ अंकित मिली
पहाड़ सँ उतरय जेना किरन एकसर
अविराम मधुवंती, गोमुखी गंगा
कोमल गान्धार केर पहिल आखर
अपन जिनगीक तेज बरखा मे
अहाँकें छाँह सन जोगाबै छी

●

जेना हमर माय

अबितहिं आगाँ मे टूटि गेल भोर
जेना हमर माय
मोसकिल सब ओढ़िकें जागल इजोर
जेना हमर भाय
पड़ितहिं नजरि तनऽ लागै अछि
दुपहर पास-पड़ोस बनऽ लागै अछि
बात-बात मे ढारय इनहोर
आ चिनगी मिझाय
किरानीक पढ़ल-लिखल कनियाँ सन
साँझ झुकय लागल बूढ़ बनिया सन
बासन मँजैत कारी भेल उमर गोर
जेना सोनदाय
बूझल कलय कोना छूटि जाइछ
भोर, दुपहर, साँझो बँटि जाइछ
तीन तरहक जिनगी आ तीन जुगक लोर
खेत भेल बटाय

●

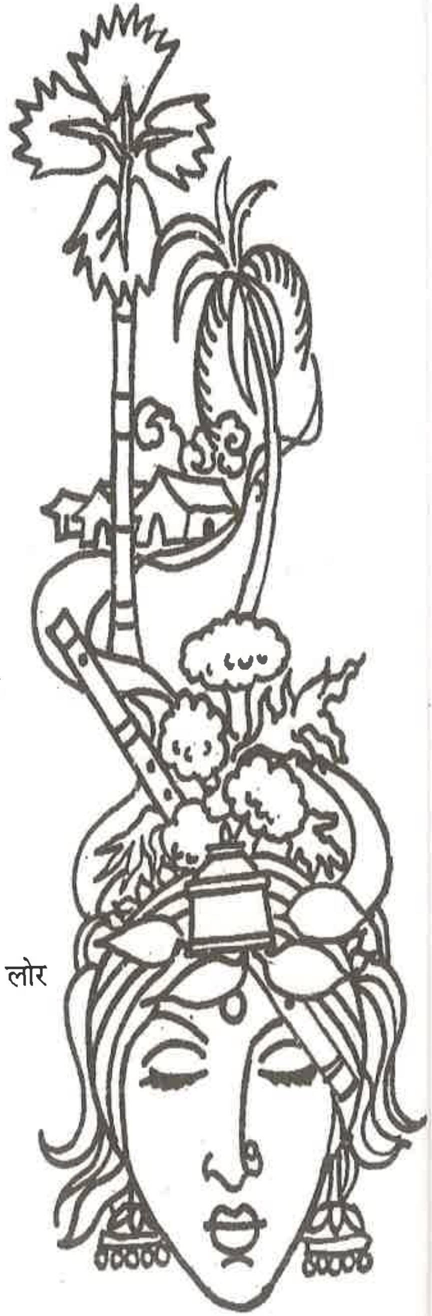

घर-बहार

की फरक अछि एहि घर-बहार मे
एहिठाम तँ इजोत अछि बझल अन्हार मे
झूठे सब परिभाषा लागय
साँझ की सबेर
धुंध एके दोहराबय
घाव कँ दाबि कऽ राखब कहिया धरि
सभ दिसक सवाल
टेढ़ पाँक मे फँसावय
आन्हर तँ छी नहिं खसब इनार मे
टूटि गेलहुँ एना जे
सूत्र कोना जोड़ब
पतझर-वसंत मे किछु हेतै
अलग-अलग बूझब
अर्थ तँ भेटत नहिं शब्द कँ उछालब
दुविधा सँ हीन अछि क्यो एक हजार मे
भीजल काठ उमरि भरि पजारब
सऽख सिहन्ता सब
अलगे उसारब
तेल कतबो दिऔ धधरा उठबे करत
लोक बनैक माने छै
पहिने सँ हारब
हहासे मे गेल नीक फसिल दहार मे

●

एतेक भोरे-भोरे

एतेक पैघ झूठ आ एतेक भोरे-भोरे
लाल-लाल-कँगना जनु खनकल पोरे-पोरे
आँचर मे करविल आ हाथ मे सिंगरहार
ठोर पर रक्तजवा खिलल अछि सै-सै हजार
बाँहि पर लिखल अछि 'श्रृंगार तिलक' जोरे
छाँहक गीताभ रेख मन के दुलराबय
आँखिक ओ इन्द्रधनुष दिन भरि बतियाबय
चाननकेर गंध उगल गाल भरल लोरे
नदीकात हिलय मगन महुवा केर जंगल
गंध नहाएल हवा खरकाबय सांकल
केसर सँ लिखल मनक बात कहब थोरे !

●

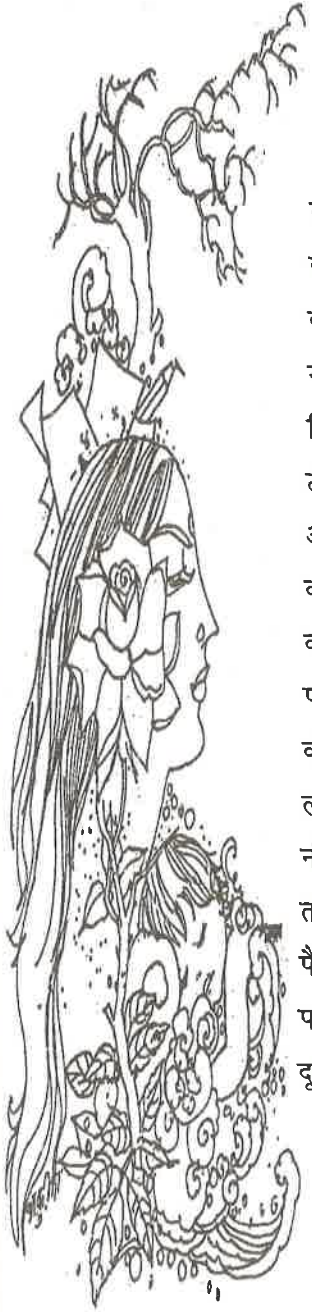

बरखा

बरखा एना बरसय
छोट शहर मे जेना कोनो घटना अफवाह बनय
दरबज्जा पर छाप हाथ के
गमकय सदिखन
चित्र लिखल ई मोर भीत पर
टोकय अनमन
आँखिक नीलपत्र पर नेहक आखर रचल रहय
कनी-कनी दूखय अछि घर के
कमती आमदनी
फूलक जगह उगल गमला मे
केवल नागफनी
लोक-वेद सूखल पोखरिके कथा विशेष कहय
नील झील सतरंग आँखि मे
तहिया राखल
पैरे उतरल इन्द्रधनुष के
पायल बाजल
दूभि उठौने मुँह अकास दिस हमरा नीक लगय

●

परती जे तोरय

परती जे तोरय ओ पीबि रहल ये धोआँ
एक लक्स साबुनकेर दाम होअय चन्द्रमा
टूटल मड़ैयाक झोलभरल भनसा
मारय ये भूख जेना बरछी आ फरसा
आध टूक रोटी पर नून लगय चन्द्रमा
कारी कोयला जिनगी खान ओ खदान मे
फाटल अंगाक घाव साँझ आ विहान मे
आँजुर भरि चाउर केर नाम बिकय चन्द्रमा
गाछ तरक दूबि जकाँ छाँह-मरल जिनगी
कखनहुँ रौद मारय आ कखनहुँ कँ सरदी
जेबी मे छुट्टीक दरखास रखय चन्द्रमा
दूरि धरि फैलल अछि पार एहि नदीके
बन्धक मे पड़ल अछि इजोरिया मँहगी के
पीयर तरहथ केर सवाल छपय चन्द्रमा

●

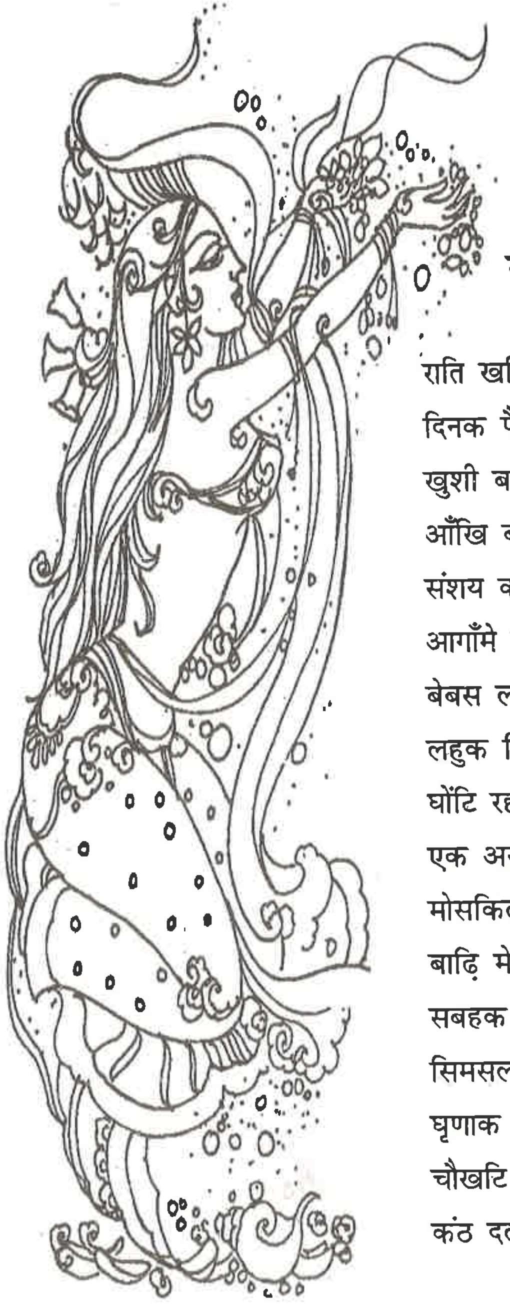

सहर धोआँ बुनने

राति खसि रहल अछि पछाड़ खाय
दिनक पैर मे फटल छै बेमाय
खुशी बनल डर थरथरा रहल
आँखि बनल हाथ तीर तनने
संशय के दाग से लगल जाइछ
आगाँमे सहर धोआँ बुनने
बेबस लगय जेना घरजमाय
लहुक निसान पीठ पर उठेने
घोंटि रहल दम अपन हाथे
एक अन्हार यात्रा मे उतरल सब
मोसकिल जीयब-मरब साथे
बाढ़ि मे भाँसल अनेरुआ गाय
सबहक कान्ह पर लटकल सलीब
सिमसल हँसी कहवाघर मे
घृणाक कजरी भरल नदी बहय
चौखटि सँ होइत बीच घर मे
कंठ दलदलि मे सबहक धँसि जाय

●

लाल सिनूर

जहिया-जहिया मोन पड़ै छी
अहाँ गाम सँ दूर
तहिया लागी बेलपत्र पर
राखल लाल सिनूर
वंशी आ मादल एकठामे
राखल रहय जेना
बीच करोटन के फूलल
हो नारंगी गेना
आँखि मुनी तँ भरि-भरि आबय
डोलय ताड़-खजूर
होइते भोर जागि जाइए
मन मे हँसीक नदी
बहुत काल धरि देखा पड़ै अछि
आँचर केर हरदी
जिद्द कतेको मीठ-काँच सन
एखनहुँ हैत जरुर
परिचय आ परनाम कतेको
रितु के आवाजाही
टिकुली सटल माथ एकटा
सबके देइछ गवाही
कुरता टाँकल बटन अहाँके
स्वस्ति कहय भरपूर

गंगा : मजदूरिन बेटी

मजदूरिन बेटी सन लागह
मुँह झबरौने केस
गंगा काटह अपन कुहेस
छोटछीन घर चूबय तोहर
रौदे फटल केबार
दूतरफें तों बझल विपत सँ
तोहड़ बन्हल किनार
दुनू हाथ सँ काम लेबह तँ
भने बुझेतह वेश
माटिक साबुन, माटीक टिकुली
शोभय तोहर लिलार
सूखल ठोर पसीने लुबधल
सुख सभ बिकल उधार
लहू वेग सँ उतरह सब दिस
आब सहह नहिं ठेस
बाम-दहिन परती पसरल छऽ
पहिर फसलिकेर आस
फूटत आंकुर खुरपी चमकत
रोटी देत उजास
तानह भौंह लचारी टूटत
रहत दुखक नहि लेस

मेघ इन्द्रनील

मेघ इन्द्रनील लाल कमल हम छलहुँ
देहरि पर टँगल इन्द्रधनुष भ' गेलहुँ
गंगा सन निर्मल मन टूटि गेल
खाली भ गेल हाथ आय सँ
नेनाक हँसी नहिं जोगाय भेल
दफतर केर अधकटल कमाय सँ
फूलल एक पीयर कनेर हम छलहुँ
बाढ़ि आ सुखाड़ि डँसल गाम भ गेलहुँ
अप्पन घर कतेक दूरि छूटि गेल
अपनापन आन लोक-बीच उगल
फाटल दसटकही सन मोनक मोह भेल
राखी की फेकीं कोनो मे नहिं कल
पूजाक पात धरल शंख हम छलहुँ
बिन बरसल मेघ केर कथा भ गेलहुँ
तुलसी-चौरा पर नेसब दीप कोना
एतेक छोट आंगन छल ने पहिने
अपन नीक-मीठ तँ अपने रहत
बान्हल मुट्ठी खुलि जैत बिना कहने
अरिपन मे रचल शुभ सिनूर हम छलहुँ
जतेक पैघ छलहुँ ततेक छोट भ' गेलहुँ

●

गुलाब नहिं रोपब

आंगुर मे काँट बड़ा दूखय ये
आब हम गुलाब नहि रोपब
भरल-पूरल जिनगी एक रचबा मे
बनल एक नाटक उदास
चुप्पी सँ भरि गेल ठोर दुनू
सन्नाटा हिलय जेना कास
पिलसिन केर नोंक एना टूटय ये
आब ई हिसाब नहिं जोड़ब
घर भ गेल छै मकान जकाँ
पथरायल चौतरफा भीड़ मे
कहिया हँसत ई वसन्त अप्पन हँसी
बच्चाक नीन जीयत एहि नीड़ मे
तरहथ केर रंग बहुत छूटय ये
आब हम अबीर नहिं घोरब
दीप जरा लहठी भरल हाथे
भरि मन आशीष कें पहिरने
प्रार्थना सन रहलहुँ सदिखन झुकल
छोट-छोट सुख कें आँखि मे रचने
मेला सन बीतल छन जुटय ये
आब हम अतीत नहि जोहब

●

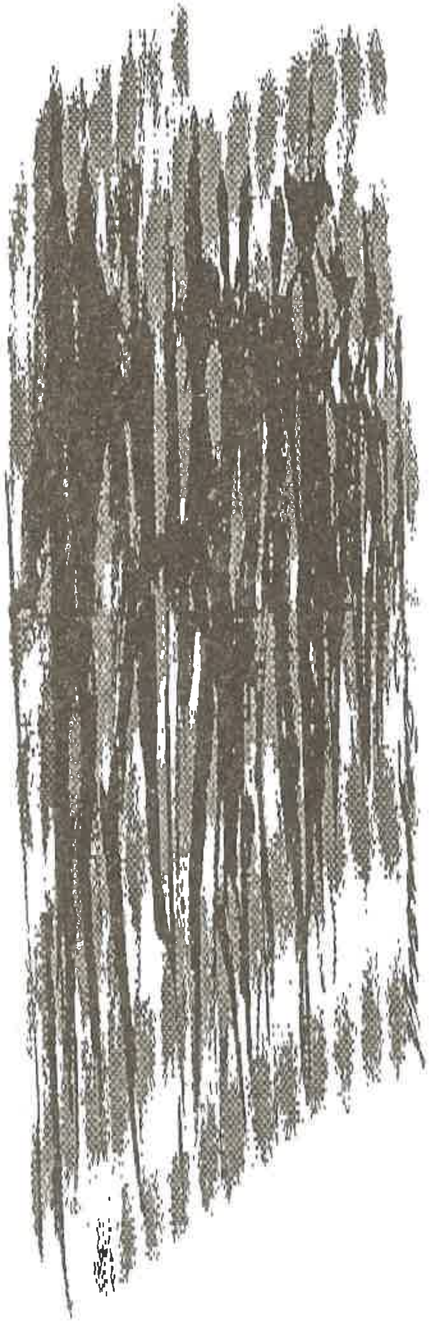

सूखल कँचनार

मोन हमर लागय सूखल कँचनार
छोट आमदनी भेल जिनगी पहाड़
मुट्ठी मे रौद रहय
चिरय बनि उड़ल
चानन सन देह छलय
सुगंध मे सनल
कोना भेल अपने सँ रूसल मनुहार
हवा जेना सुन्न
काँट-वोन मे बहय
एखनुक उदास हँसी
आँखि मे गरय
ऊबल-ऊबल साँस लागय पतझार
गाछ-बिरिछ पर पसरल
धुनल-धुनल तूर
एहिना मे अपन केयो
लागय बड़ दूरि
अनकर लागय अपन घर आ इनार

●

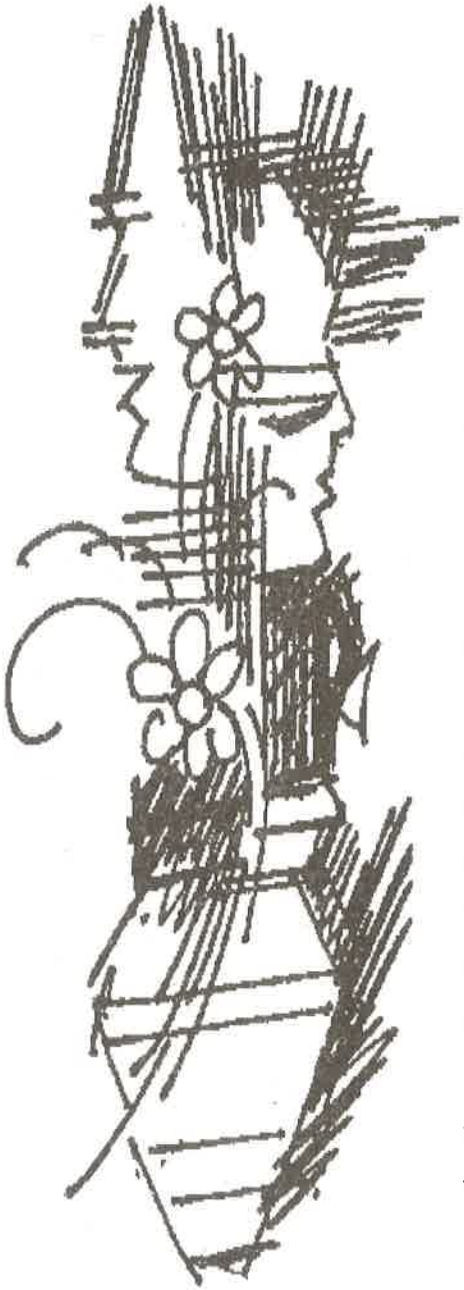

जिनगी

नाह जकाँ जल पर थर-थर-थर
डोलि रहल जिनगी
एक हवा एमहर से आबय
लगय उड़ाबय पाल
दोसर आगाँ-पाँछा मारय
बीच नदी बेहाल
अधरस्ते मे लागय एकसर
हम वापस चलि दी
सुरुज उगय तँ जिनगी ऊगय
लहर-लहर पर जाल
आँतक डोर हाथ अछि बान्हल
माँझी डेग सम्हाल
एहन अन्हार बाट भेल आन्हर
जरय एक चिनगी
कोनो फरक आब नहिं मानय
दिवस-मास या साल
कसने तीर मनक दुख लागल
जंगलकेर सन्थाल
लगय जेना आबि गेल दाहर
पहिने सन सुनगी

●

झर-झर साओन

बरसय लागल साओन झर-झर
गमकय माटिक देह
लगय खर पातो हरियर-हरियर
कनियों नहिं सन्देह
बैगनी रंग रंगल अछि पोखरि
फूलक पैर छुअय
राति-राति भरि मेघक पहरू
द्वारे-द्वार फिरय
जोड़य अप्पन सोना-आंजुर
खेतक धानी रेह
रक्तपलास आब नहिं फूलय
छाँहो हँसी करय
छपल अकास पानि पर सबदिस
मोरक पाँखि लिखय
टपकय गरमीक आस निरन्तर
चूबय होरिक गेह
सन्नाटा रोपल चौमासक
आँखो नहिं सूखय
रोटी भेल अकास पेट ई
बान्हि राति सूतय
भीजय जारनि सन हम्मर घर
सुनगय भूखल नेह

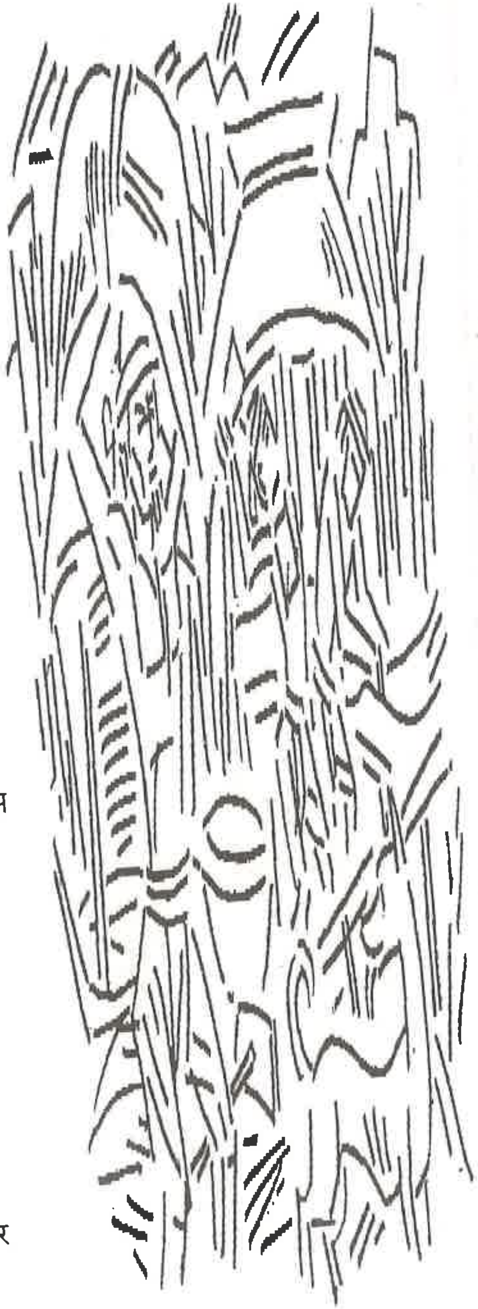

हमर आंगन मे

खिड़की खुलल रहय
सुरभि सँ रचल अकास
हमर आंगन मे बसल रहय
गूँज आरतीकेर मंदिर सँ घर मे आएत
करत इजोतक इन्तजार परदा फहराएत
कान उठेने बछरू सदिखन जगल रहय
सोझे सुगंध नहाएत देहरि सिंरहारकेर
हलचल होएत घासक जंगल में पहाड़ केर
गिरैत ओस केर उज्जर चनवा तनल रहय
अछिंजल सन इजोत भरिकें निकलब घर सँ
हँसीक जाल मे फँसि जाएब फेर खुशीक डर सँ
उगइत दिवसक ई नव-नव कोंपरि फुटल रहय
मोन बहुत लागत पसरत संवाद अनेरे
रचल-अनरचल गीत ठोर पर उतरत पूरे
साओन केर जलगीतक घुंघरू बजल रहय

अप्पन गाम

अपन गाम-घर-लोक चिन्हा नहिं पड़ल
पता पर पहुँचिकें चिट्ठी जेना फिरल
रौद आ सुखाड़ि मे जरय एतय अषाढ़
भने और केओ मनबौथ एशियाड
बाढ़ि चढ़ल जिनगी केर नोर अछि बिकल
मोन पड़य गामक तिलकोर आ मखान
परिचय-परनाम संग दू खिल्ली पान
हाट कीनल कुरता के संग सब उड़ल
कातिक सपनाएल छल भरि थारी भात
खेते-खरिहान कटल अगहन के हाथ
एने चलय खंजर मलहम ओने बँटल
बेटीक छठिहार आ महाजनकेर लहना
बजर पड़य कलकत्ताकेर पाथर अंगना
नौकरी पर दू सै के चारि सै गिरल

●

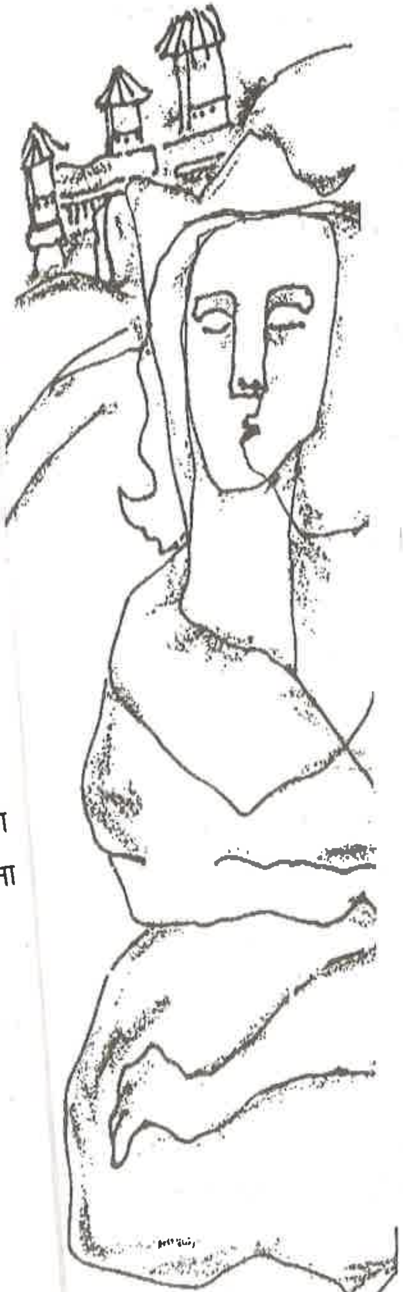

आँखि बनल कान

उतरल आंगन मोर चान
गमे-गमे
उतरल आंगन मोन चान
मोनहि मोन सिहरय अछि पल्लो
करय उपर सँ लाथ
तखनहिं उतरि आँखि मे आबय
हरदि लगल दुनू हाथ
परस एहन पुरवा के लागय
राखल नरम हाथे पान
छिटकि किरिन भुइयाँ छितराएल
जहिना महुअक-खीर
मोन मे बाजि रहल कत नूपुर
तरहथ भरल अबीर
नभ मे एना तरेगन पसरल
पोखरि फुटल मखान
छन-छन काँपि रहल अछि भालरि
आँखि बनल अछि कान
लड़िकोरक कोरा सन शीतल
रातुक पहरक तान
पछुवारिक धुन-सुन सँ लागय
खोलने हवा दोकान
माछो ससरि उपर चलि आबय
गोढ़िन कें लागल पाँखि
गोरकी भौजी जकाँ इजोरिया
गोरस बाँटय मुनि आँखि
उठितहिं भोर दही देखने छी
आंगन बनल अछि दलान

●

बौआक अबैया

भोरक गाड़ी सँ बौआ आओत
साँझ कें छोट सन चिट्ठी भेटल
मोन तखने सँ लागय हुलसल
खुशी पहिरने आँखि तकय ये
खिड़की धेने कान
बेसन सानल हाथ पकड़ने
अंगना आओर दलान
भनसाघर के छन-मन गाओत
जे एखन तँ रहय समेटल
फर-फर उड़त हवा मे पन्नी
देहरि झरत अबीर
रंगक बालटीन सँ छूटत
ललका-पीयर तीर
बेटीक नूपुर रूनझुन बाजत
ई सुख घर मे सबतर बरसल
उज्जर कुरता पर सँ ढ़रकत
रंगक सोझ टघार
एके हाथ पीठ कें छापत
छापत घरक केबार
देहक छूटल रंग नहाओत
काग चार पर अछि उचरल

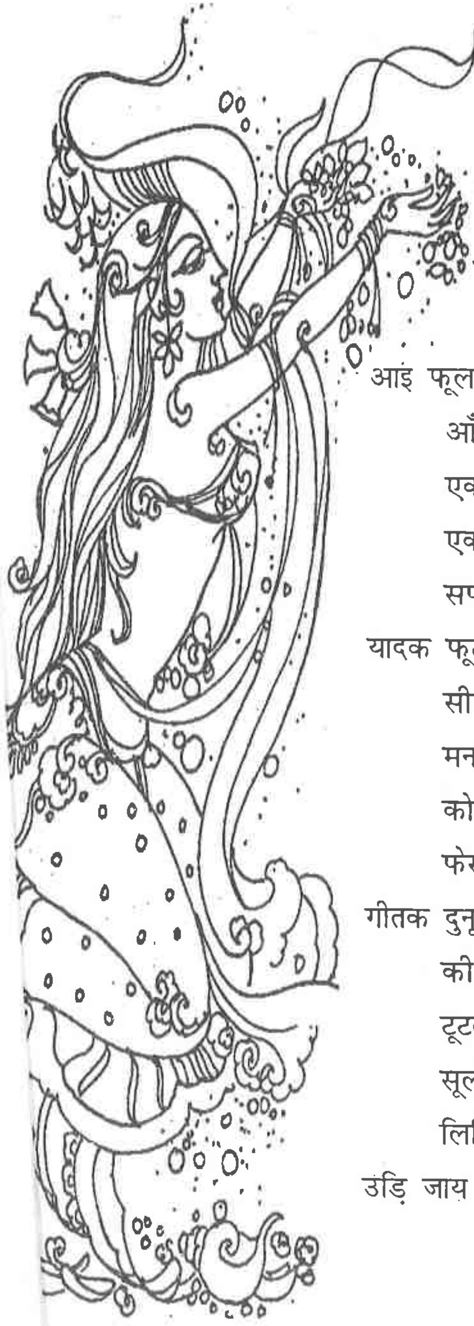

कतेक दिन पर

आइ फूलल कनेल कतेक दिन पर
आँखि हमर बनल दरपन अनमन
एक लाल वसन्त रचल सदिखन
एक रपट भरल जामुनक डारि
सपनाकेर हाथ हिलय कंगन
यादक फूटल पुरइन मरु पर
सीपी ओ शंखक जंगल छल
मन के तट पर से सभ बिखरल
कोनो जे पीड़ा छल पुरान
फेर-फेर ओ रूप बदलि उमगल
गीतक दुनू हाथ उड़य केसर
की यादि छुअल भेल गीत गरम
टूटल ओ झीलक नील भरम
सूली पर कटइत छल पल-छिन
लिखि उपालम्भ ओ गेल नरम
उड़ि जाय अबीर लाल आंचर

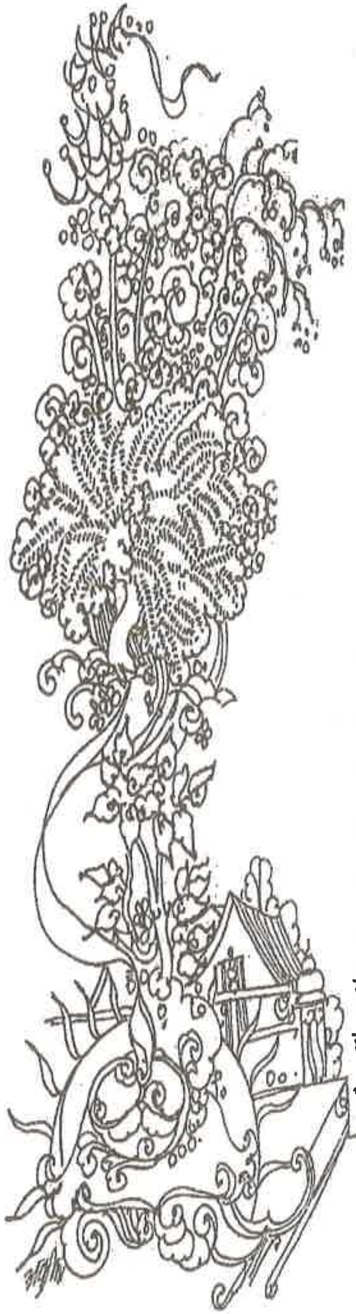

गीत-गीत भेल

देहरिकेर पार सँ एक किरिन आएल
गीत-गीत भेल हमर सगरे घर-आंगन
सोनजूही रोपब एहिठाम उगत अमलतास
गुलमोहर-रंग मे नहाएत सबतर बसात
तुलसी -चौरा पर ई दीप झिलमिलाएल
मीठ-मीठ भेल पोर-पोर देह आ मन
नील रंग अंगा सूखल कात एहि दलान
बेटीक हँसी जेना फूलपात ओ मखान
पछिला ओ यादि जुहिक डारि सँ फुलाएल
नीक-नीक लगल हिलब हाथक ई कंगन
बाबूजी पढ़ता एहिठाम कबीर-रैदास
दफतर के कागज-पत्तर मे नहिं ई उजास
अगिला वसन्त तरहथ पर सुगबुगाएल
आँचर मे अतरक दाग करय सुन-गुन
भोरक ई नरमी रातिभरिक उमस-बाद
बेटाक पहिल-पहिल दरमाहा केर प्रसाद
हमर नीन आ हुनकर सपना सगुनाएल
भने-भने भेल हमर छन्द रचल-बसल दिन

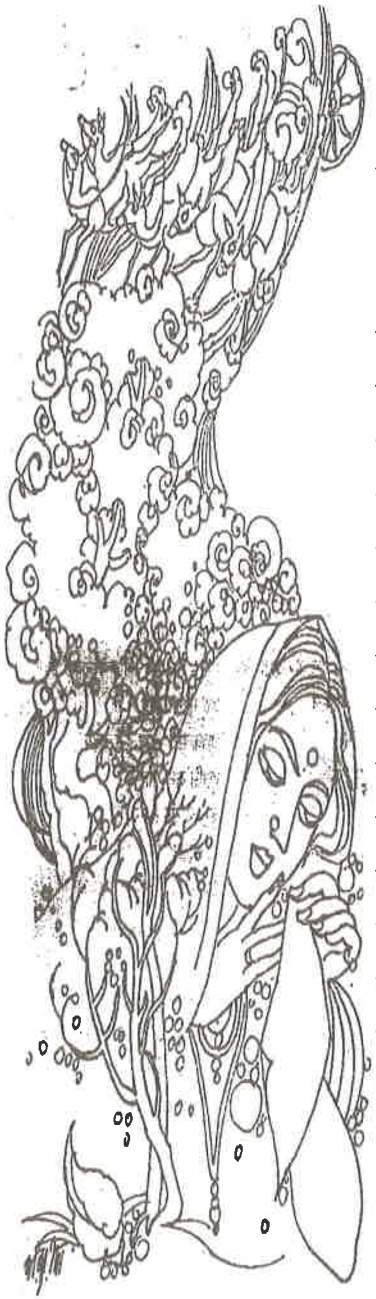

भ गेलहुँ पलास

रंग में एना नहा गेलहुँ
आध अहाँ गुलमुहर भेलहुँ
आध अहाँ भ गेलहुँ पलास
एक डारि पर फूलल चम्पा आ बेला
पीठ अहँक लागि रहल गामक हो मेला
हमरा तँ इहए एक छन मे
फूल, गंध, हवा बदलि देलहुँ
बदलि देलहुँ काँचकेर गिलास
बिसरल आखर सन पतझड़क रोसनी
बिना बरफ छूनहि लागय छल कनकनी
साँझक डाके भेटल चिट्ठी मे
शब्द-शब्द एना बुना गेलहुँ
कहियो नहि भेल हैब उदास
नदी मे कालीन अकास धरि बिछाके
हरिनक रंगीन रथ गुजरय ओहि बाटे
किरनक सात जोड़ शंख फूँकि कें
गाम-गाम कें जगा देलहुँ
जागि गेल वनो मे जवास
आध अहाँ भ' गेलहुँ पलास

गामक लोक

बिना चाहने लिखा गेल अछि
मौसम सोरक नाम
कारी आँधि बीच आबि गेल अछि गामक लोक
दुपहर सँ तमसाएल गाछ पर
डेन कें फरकाबय अछि चील
डूबि गेल अछि अपन आगि मे
नील निर्मल दरपन सन झील
नवका आँकुर सबहक मन मे
मचल कठिन कुहराम
के जानय एहि जकाँ कखनधरि सुनगत हाथक नोंक
नरक जकाँ अन्हार चारू दिस
बैसल अछि पहरा पर
एहि मे भोरक बाते जोखिम
रोष करब ककरा पर
भइया गेल परदेश आ बाबू
सिरिफ राम के नाम
बदलि दैत अछि हवा अपन रुख खून पीबै अछि जोंक
बस्ती-बस्ती थाकल शामिल
साँझक शोक-सभा पर
अप्पन घर गिरल जाइत अछि
ओकर दूना तेवर
सपना ओढने आस बिछौने
अथिर आओर गुमनाम
डूबि गेल सुरूज दिन रहिते माथ करज के थोक
भीड़ जमा भ' रहल आब
मुखिया दलान पर
आब ने भूख दबाकें क्यो
हिलकत मचान पर
पेट सँ उगिकें भोर बाँटतै
घर-घर युद्धविराम
हँसी, बचपन, खेल-खेलौना सबकिछु राखब रोकि ●

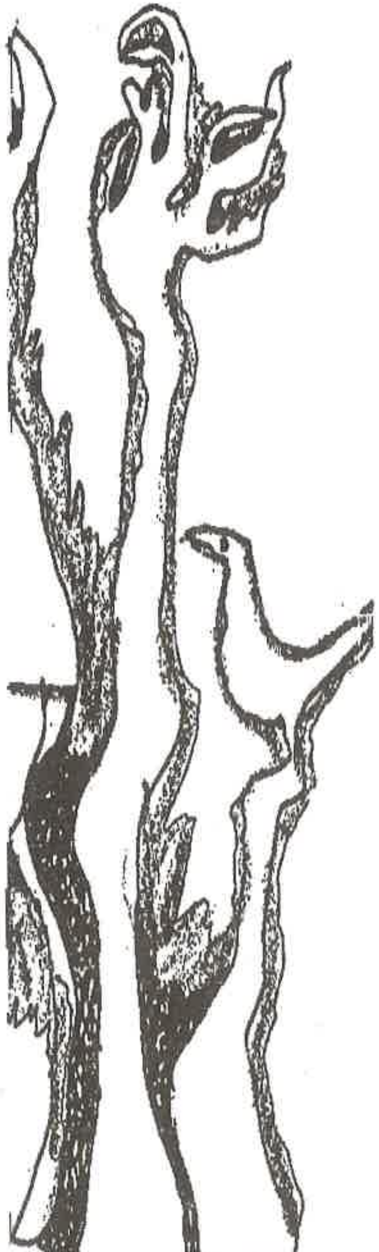

चानन वन

चानन-वन हम कथी लय रोपल
कथी लै रोपल कँचनार
हाथक संग पेट बन्हि जाएत
छल नहिं एहन विचार
रौद जँका ई देह हमर छल
छाँहों मे तपि जाय
तूर जकाँ से धुनल-धुनल अछि
मौसम हाट बिकाय
आसिन-कातिक किछु नहिं बुझलहुँ
अगहन रचल दुआर
राति-राति भरि आँखि मे आबय
एक सपना रतनार
धानक संग-संग बेटी बाढ़य
हुलसि जगय मोर कोर
करजक संग-संग पिय मोर जागय
मोन दुखय थोर-थोर
होरी दशहरा किछु नहिं जानओं
जिनगी भेल अखबार
गाम-गाम के लोक भगै अछि
सहरक बीच बजार
बनलै तँ बनओ शहर कलकत्ता
रहै तँ रहओ असाम
पिताक हाथे कोरल-बूनल
हम नहिं छोड़बय गाम
पुरबा-पछवा भरबय आँचर
सुरूज कें देबय लिलार
बिन्दीक रंग भने उड़ि जइतए
जिनगी मे रहत निखार

अहाँकेर बिन

आंगन आबिकें ताना मारय
ई सामंती दिन
एक अहाँकेर बिन
थारी परसय मे हाजिर
रहयवला दू हाथ
खून-पसेना कें खुशबू सँ
रचल-बसल ओ साथ
आँचर परछाँही फसिलक जे
माथ सँ जाइछ छिन
एक अहाँकेर बिन
एक अहेरी मन जागइए
पकड़ि गंधकेर डोर
गमक फसिल के गीत चिरैयक
लगय परब सभ ओर
नदी-नाल-परबत फिरि आबओं
गड़य न कोनो पिन
एक अहाँकेर बिन
खेल माछकेर देखा पड़य छल
बस्ती-बाजार ओ गाम
बरदो सन खटिकें लागय छल
ताजा अप्पन नाम
राखल जुआ कान्ह नहिं ढाहय
कठिन पहाड़ी रिन
एक अहाँकेर बिन

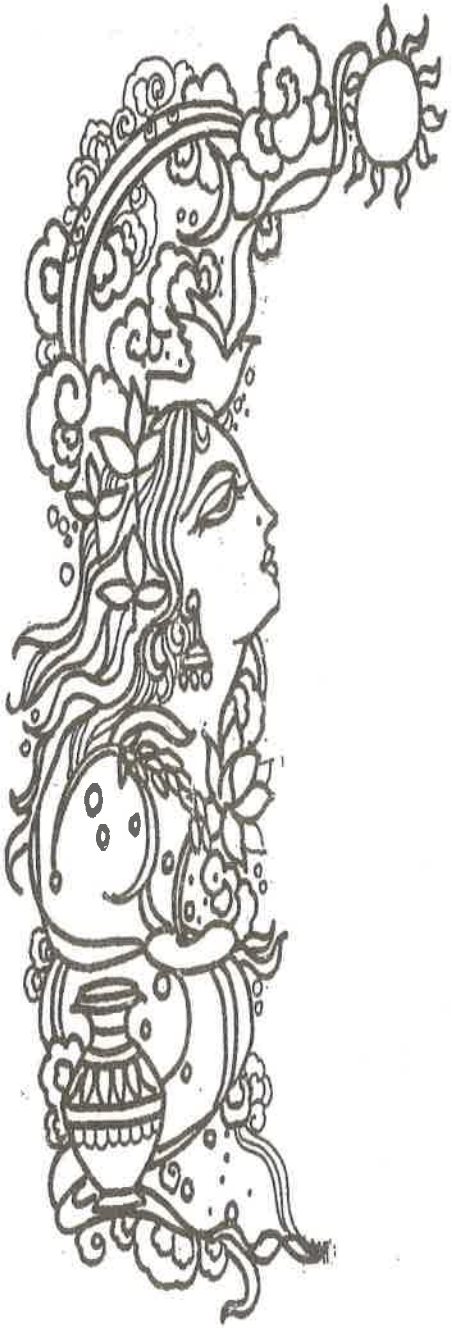

ऋतु वृन्दावन

दरपन जकाँ हाथ सँ छूटल
एना सीपिया मन
लगल एक निमिष मे बदलल
सब ऋतु-वृन्दावन
गाम सँ चलैक बेर शुभ
हाथ मे होरी-कजरी छल
आँखि जेना कलसी मे
झलमय छलकय गंगाजल
नील गगन मे उड़इत पाखी
घुरि-घुरि ताकय वन
एक पिरीतक कारन जेठक
रौदो सेहो रूचय
आँखि मे कँचनारक कतार सन
छवि के गाम उगय
ठोरक हेम हँसी कोका सन
पसरल छल अनमन
मोन होइछ बैसी जेना
बैसय सीढ़ी पर साँझ
बाँसक झुरमुट मे केओ
रहि-रहि बजबय अछि झाँझ
पानि पर अछि पिछड़ि गेल
भिनसारक काँच किरन

होरी मे

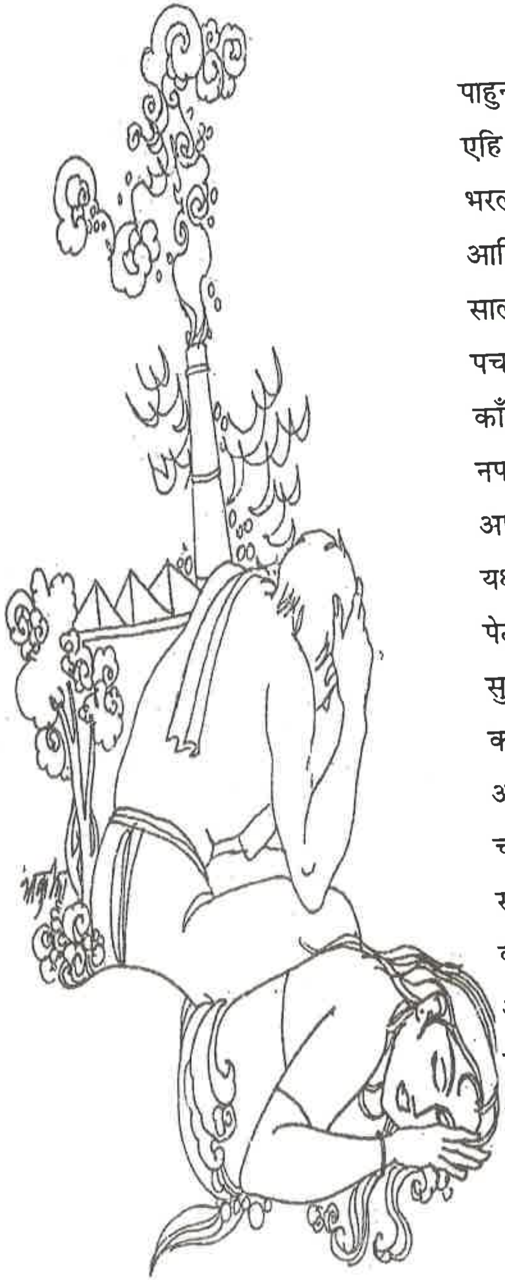

पाहुन, नहिं लागै अछि मन
एहि बेरक होरी मे
भरल फागुने लागि रहल अछि
आबि गेल हो जेठ
साल भरिक दरमाहा जेना
पचा गेल हो सेठ
काँटे टा उपजाबै अछि वन
नफा बूझय चोरी मे
अप्पन ग्रामवधू सँ बिछुड़ल
यक्ष बसल आसाम
पेटक मारल जूटमिलक मजूर
सुखबै अछि घाम
काढल बिना ओसारे अरिपन
अक्षत नहिं रोरी मे
चूर भेल काजक थकान सँ
सूति रहल कमली
दस पाइक अभाव मे नहिं
ओ कीनि सकल टिकली
माथक बोझ दबल वृन्दावन
सेहन्ता भरल मनोरी मे
एहि बेरक होरी मे

●

एक डारि छाँह

द्वार अहँक, द्वार हमर
गाछ एक रोपल
एक डारि छाँह छोड़ि
अहँक गंध-कोंपल
शीते धुअल इजोरिया पसरल भरि आंगन
हमर नयन-मोन एखन कनक-मढ़ल दरपन
एक जोड़ नदी बहल
शंख-सीप सौंपल
एक गाछ सुरुजमुखी पछुवारे फूलय
मोन बनल सागर - तट सुरूज-बिम्ब ऊगय
महुवाएल इच्छा सभ
आँखि रहय गोपल
लोकक सम्बंध रहत पहाड़ बनल एहिना
भने फूल-पात ओतय उगि जाएत कहुना
गीत भरल अन्तरक
तान कक़र टोकल

●

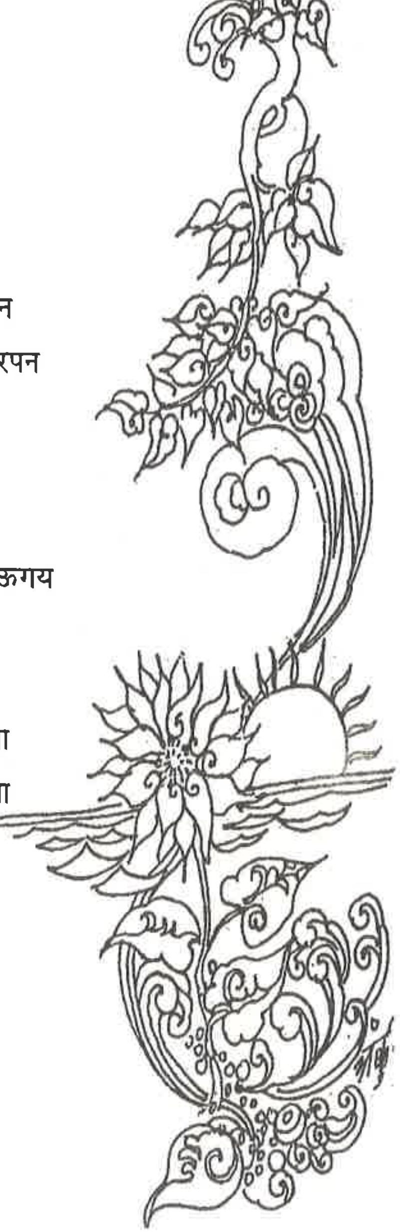

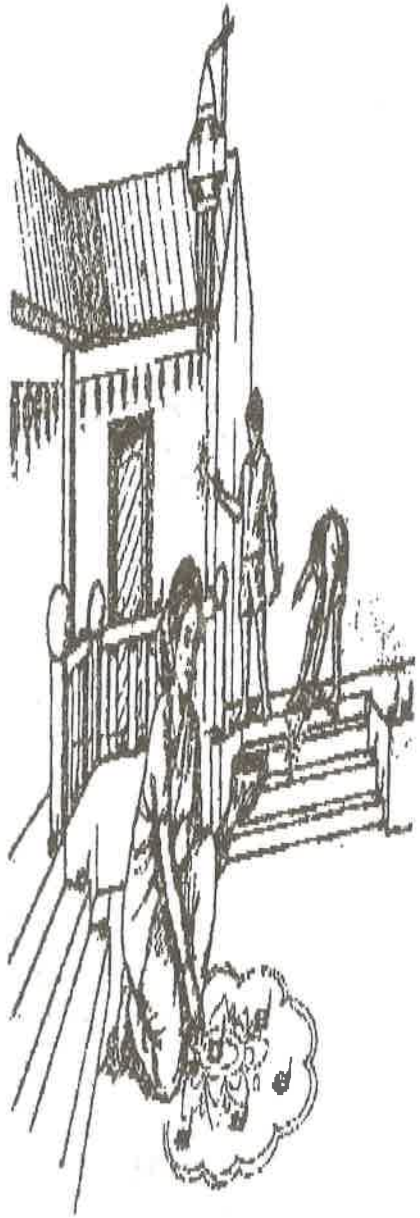

गामक कुशल

मोर की हिरना
किछियो कहय ने
गामक लोक कुशल सँ छथि ने !
कटल-छँटल ओ डारि अनारक
सुन्नर छितरल पात कनेरक
डारि-डारि गलबाँहि हवा केर
झुमुर-झुमुर दिन-राति रहय ने !
खैरक दाग भरल ओ आंगुर
उज्जर-पीयर गमकल केसर
भीजल आँखि बचाय दुआरे
नहु-नहु पानक पात हिलय ने !
भोर मे करविल साँझ मे अड़हुल
दिन-दुपहरिया चानन सँ मिल
हँसी-हँसी मे देहक झरना
झरि-झरि पुरइन-पात लिखय ने !
खन पुरबा खन पछुवा सिहकय
कंगन सन किछु ओहिना खनकय
दिन-दिन भरि बतियाएत मेघक
संग-संग ठोरक रंग खुलय ने !

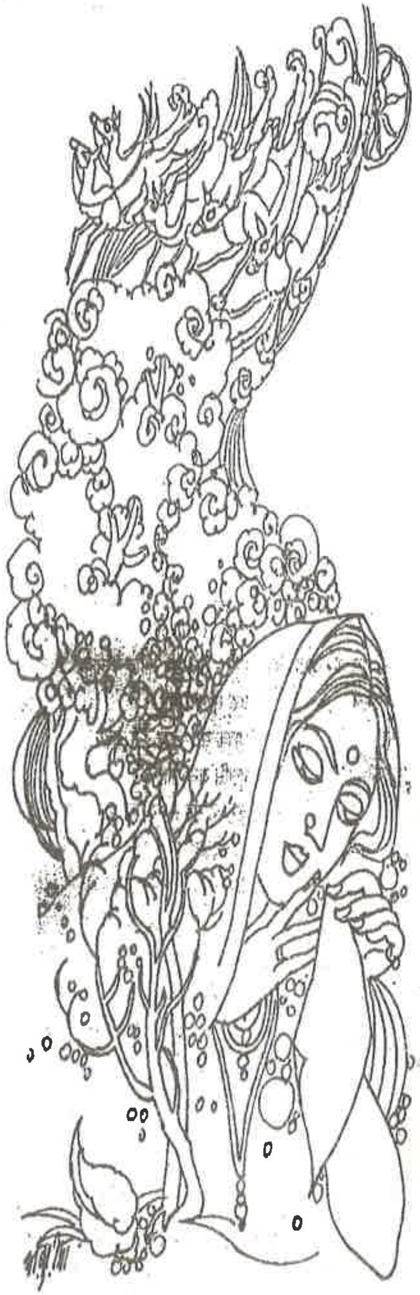

आँखिक मोहर

बेर-बेर हमरा के बजबै ये
फसिलक गंध-गुँथल छाँव
चलू शालीना, हम दूनू चली
हरल-भरल खेतक गाँव
फसलक बीच अहिंक चेहरा अछि
ममता भरल अहँक आँखि
छितनार बाँहि मे एना समेटय
सब दुख-तापक पाँखि
अहँक आँखिक मोहर लागल
अरिपन कढ़ल जेना ठाँव
अप्पन बेटी सन कोमल हरियरी
आगाँ मे किलकय ये ठाढ़
हवाक यान पर बैसि घूमि आबय
सपनो मे आबयए बाढ़ि
अकास सन निलका पगड़ी मे
बाबू सम्हारै छथि दाँव
अनदेखल लोकक बात की करओं
ई जिनगी लागय अछि नीक
डेग बढ़ाऊ रोपत उजाला
अहाँक एक जोड़ पाँव

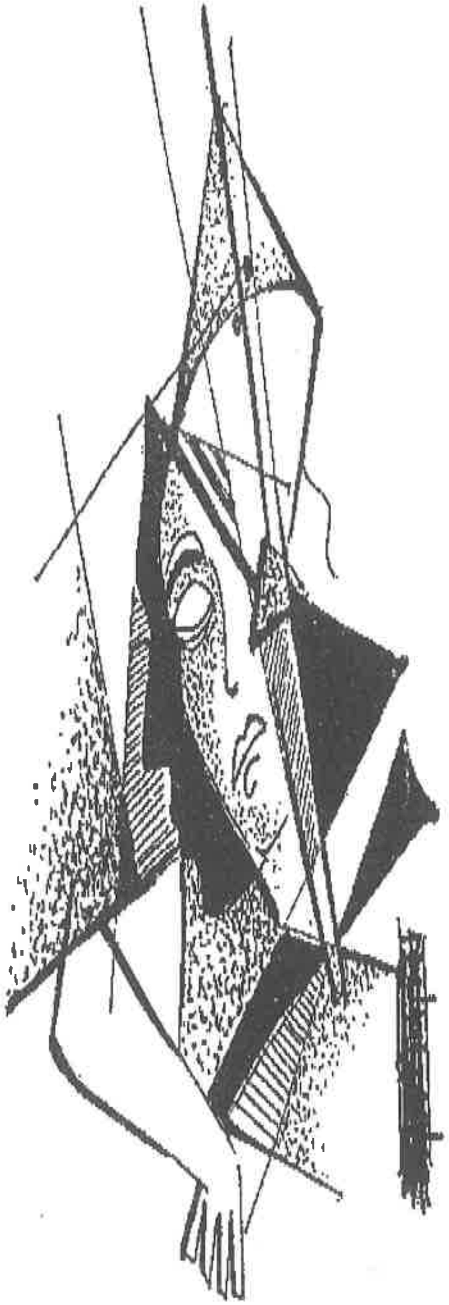

सुनगैत बारह मास

रोसनी घर-घर मे पहुँचत
पढ़ने छलहुँ किताब मे
कहाँ बुझाएल ओ घर अपने
राखल अपन हिसाब मे
फटल-पुरान मायकेर साड़ी
बाबुक थाकल साँस
दबल खुशी घर मे नेना के
सुनगैत बारह मास
सुन्न उदास आँखि भेटैत अछि
उगइत दिनक जबाब मे
नहरक पानि सुखल ने कहियो
फसलि सुखैत रहल
हमर चेहरा हरदम हम्मर
पेटे बनैत रहल
खोंता सँ उड़ि चिरय उदासल
भागय अपनबचाव मे
युवतीक लाश बरामद, जरइत
घर ओ बिना केबार
एके तरहक लोक कोना
बनि जाइत अछि अखबार
वोनक वोन उगय भाकन अछि
पानिक बीच जमाव मे
सोलह बरखक हँसी कतहु
होमय एतेक मुरझायएल
सूखल ठोरक गीत लाबा सन
फूटय आ छिड़ियाएल
कोन पिलसिन सँ लीखल दिनई
बुनल दुखक मेहराब मे
झरैत रहत तुलसी-चौरा पर
पीयर फूल कनेलक
उज्जर दिनकेर नीक कथा
अपने आंगुर लिख देलक
कोनो उदय कें अस्त कहब नहि
मानब कोनो दबाब मे ●

लाल काका

खेतक आड़ि पर ठाढ़ भेल
उदास लागथि लालकाका
उजरल सोहाग सन लागय
बाढ़ि सँ धोअल-पोछल गाम
गील माटि पर खिंचल रेख
मोनक कमजोर प्रणाम
आँखि तेना ऊसर भ गेल
पेट सँ देखथि लालकाका
जंगली हवा सन दौड़ैत छल
बिछिया बन्हने सगुनी बेटी
होरीक मादल सन ठनकि पड़य
बेटाक बोल सपनक पेटी
ओ कथा कहाँदन दहा गेल
हाथ सँ बाजथि लालकाका
टूटल खटिया पर देह पड़य
तँ लागय तड़कि जैत पसली
पछिला सुदभरना पड़ल रहल
देहक खातिर बीकल हँसली
टीनक थारी हो जेना जेल
चुपचाप सोचथि लालकाका
एहि बेर जँ फेर गाम एता
किछु मांगय पंचसाला बाबू
अपन आँत कें लाख दबेता
उघड़त ओ हटि जाइत काबू
एक अगिन कुंड सन दहकि गेल
मुट्ठी बान्हथि लालकाका

●

चम्पाक गीत

चम्पा कें देखि कए पलास
कनी खुश बहुत भेल उदास
पीठ सोझ कऽके बजल
जिनगीक मारि सँ विकल
अहाँ नहिं रहू विमन एना
मौसम कें हमर सबहक बल
घाम कें हरैत हिलय कास
पाछाँ तँ आब होएब नहिं
रस्ता सँ एना घूरब नहिं
बरखा की जाड़ की सुखाड़
अपना कें कोनो फरक नहिं
तारक पात किरिनक उजास
पता नहिं कखन खिलल फूल
कखन उड़ल रस्ता पर धूल
गंधक संकेत सँ बुझाएल
बहुत दूर नहिं उमड़ल कूल
बाँटि कें हवा मे विसवास
आब नहिं होएत ओ उदास

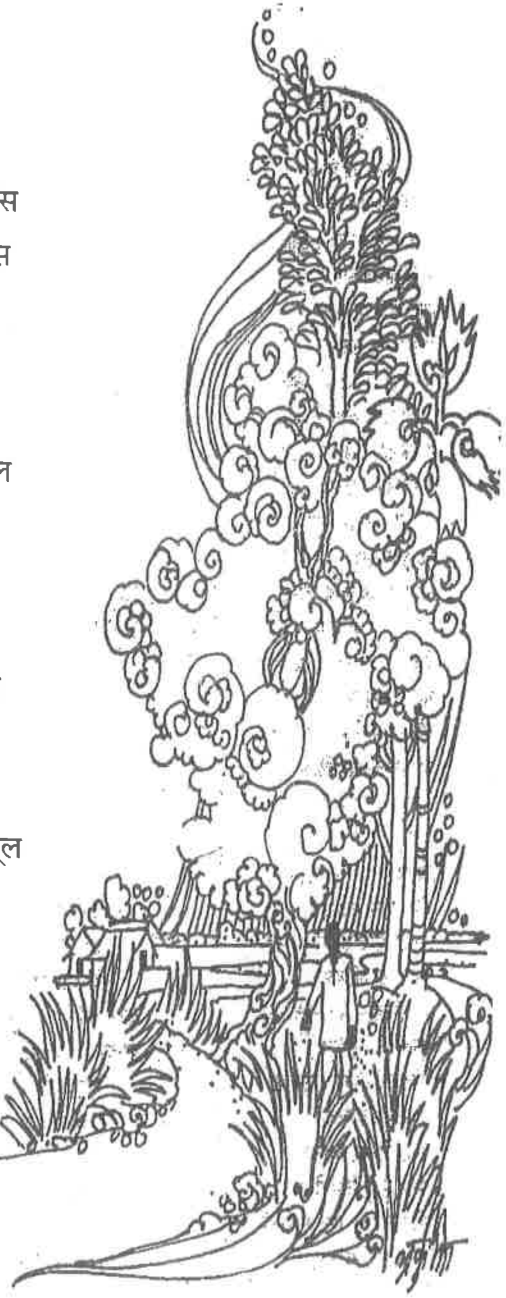

साँझक निसान

सीपिया साँझक निसान
खिंचल जे तरहथ पर हमर
हम तकर की करू !
दिन-दिन बादरि-घेरल नभ लखि
रितुक होय पहिचान
एक दिनक अनुराग मे बान्हल
जिनगी के मधु गान
पानि पर रौदक बान
खिंचल जे मन पर हमर
हम ओकर की करू !
मन मारि देखै छी मौसम कें
तँ हाथे नहिं किछु आबय
पँखुरी-पँखुरी रंगहीन अछि
घेरि-घेरि बतियाबय
दुख पाथरक कमान
गड़ल जे छन पर हमर
हम एकर की करू !
स्वागत-हीन दृश्य सभ एमहर
ओमहर कतओक पाटल
इन्द्रधनुष कान्ह पर टँगने
लोक-वेद मे बाँटल
बीचोबीच सीवान
गड़ल जे पथ पर हमर
हम ककर की करू !

एक इहो दिन

सोनजुही हँसी काँच सन चनकल
एक इहो दिन फेर बीतल
खुशीक नाम पर किछु
सुगंध रखने छी
हाथक रेखा सभ कें
मुट्ठी मे कसने छी
नागफनी-नोंक सन सेहो एना गरल
एक इहो दिन फेर बीतल
पाथर विसवास आ
मुरूत मे फरक की ?
इच्छा भेल माटि केर
खेलौना जीयब की ?
लाल-नील मेघ फटल आँचर पसरल
एक इहो दिन फेर बीतल
माछ सभ रेत-रेत
भेल एकं छन मे
सपना सब पानि फेर
सेमारक दरपन मे
आध-छीध परिचय पात गेल बिसरल
एक इहो दिन फेर बीतल

●

चिट्ठी घुरल वसंत

दफतर सँ थाकल आबि देखि
उड़बय रूमाल मधुमास
घर-आंगन मह-मह चानन
ओहिना भेल मोन उदास
जेना चिट्ठी घुरल वसंत
अँकुरल स्वप्न अगोरल
आँखिक कुहेस भरल अकास
जंगल मे कस्तूरी गमकल
पसरल-पसरल कास
जेना रौदे जरल वसंत
सात-सात रतनार प्रतीक्षा
बिन बाजल विसवास
युग-युग सँ एक गीतक खातिर
सहज सौंपि देल साँस
जेना टिकुली गिरल वसंत
गुलमोहरक कोर ललाएल
आ कमलवनक मृदु हास
तन थर-थर कऽ दैये
ई चुप-चुप किसमक परिहास
जेना बरछी गरल वसंत

●

कँचनारी छाँह

दिन-दिन कँचनारी छाँह हमर आंगन
कागज केर सहज बहल नाह हमर आंगन
मुट्ठी भरि रौद आ पानि भरि आँजुर
एक शब्द एक मौन अर्थक सै नूपुर
रातिक ई रौद केहन पटल हमर आंगन
सरिसब सन पियराएल रितुकेर भोलापन
सागरक फेन जकाँ धूनल घर बाध-वन
एक नदी कूल संग जगल हमर आंगन
उमड़ि-उमड़ि जेबाक ई बदराएल छन
आओर दिवास्वप्नक आसंगित घन
चानी मढ़ल नदीकेर धार हमर आंगन
गीतक आमुख सन नयन दुनू भेल
जिनगीक भाग-दौड़ कथा बनल गेल
चौक पुरल आरती जरल हमर आंगन

●

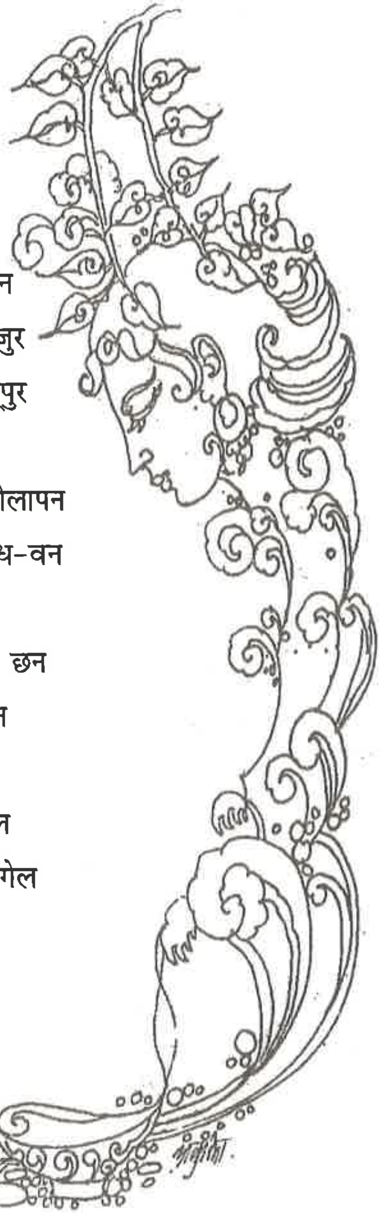

आँचर केर नाम

काजर जे लिखल पत्र आँचर केर नाम
सहज भेल मोनक बोझ नोर भेल विराम
आँखिक कोर मे सिनेह उठल डोलि
छोटछीन खुशी देल मनक गिरह खोलि
फूल पात, गंध-दीप लहरक परनाम
दू-चारि आखर मे बाजि कमल-पात
बिसराओल पुरवा संग पछियाकेर घात
अनदेखल अनुभावक पहिचानल गाम
परिचय-पाती मे रोपि चम्पई कनेर
आबो धरि फुलइत अछि साँझ आ सबेर
झाड़ि देल दोना सँ मोती अभिराम

●

करविल नहिं फूलल

रितु गेल एना जे नहिं घूरल
करविल नहिं फूलल, नहिं फूलल
चलि गेल मेघ रहि गेल पानि
छूटल नहिं पुरना सहज बानि
मन काँपल, काँपल आ काँपल
कतबो रोकल उड़ि गेल छानि
किछु बात मनक एखनहुँ दूखल
सपना सँ लीखल आँखि हमर
हाथे छुअइत मन भेल केसर
जिनगी जे उठल पैर सन अछि
सुन्नर लगितय पथ के आखर
अरिपन आ चौक रहल पूरल
बाड़ीक नीम द्वारक पलास
आपस मे किछु बाँटय हुलास
जँ हारि-थाकि कें बैसि रही
ओ बहय हवा सन पास-पास
मेहदीक रंग कहिया सूखल

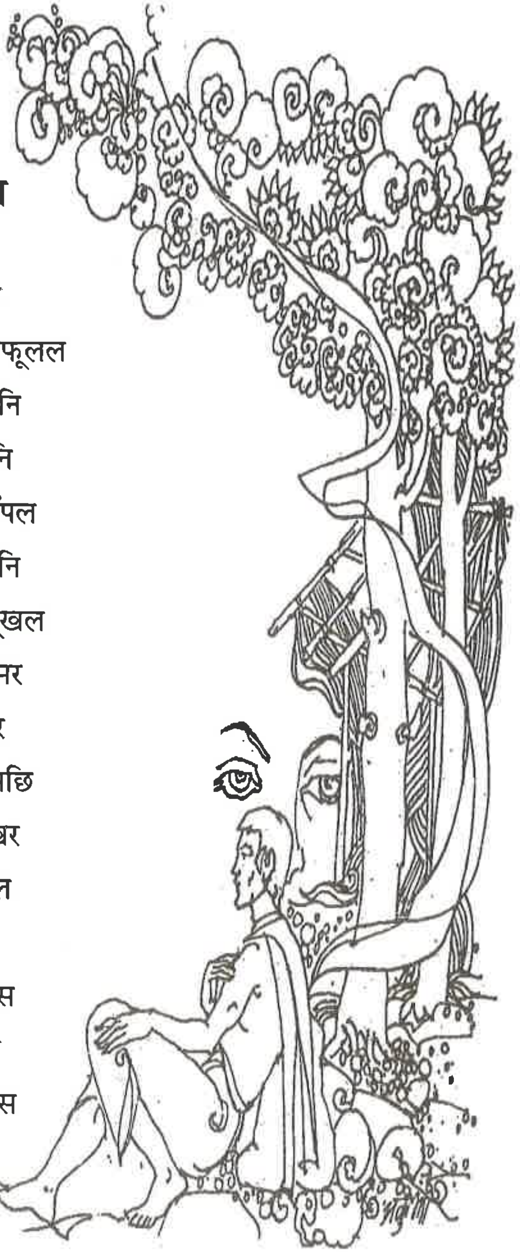

फागुन केर दिन

सुगंधक नदी डूबिकें आबय
फागुन केर फूल भरल सँवरल सजाएल दिन
एने-ओने पसरल अछि मोजरकेर गंध
चुप्पेचुप गदराएल मोनक अनुबन्ध
समुद्रक दिस मुँह कने नदी गाबय
चुप रहत आंगुर मे आँचर समाएल दिन
आँखिक कोर लिखल रंगक मधुगान
उज्जर वसन्त किछु राखय नहिं मान
अन्हारक पत्र कें इजोत एना बाँचय
कनखी भेल कथन सहज कमल जल नहाएल दिन
बेलाक फूल एहिना अधराती फूलत
देखि-देखि पुरइन मन बेर-बेर पूछत
सूतल अभिलास कें प्यार सँ जगावय
पुरहर-अहिबात मे नेह झिलमिलाएल दिन

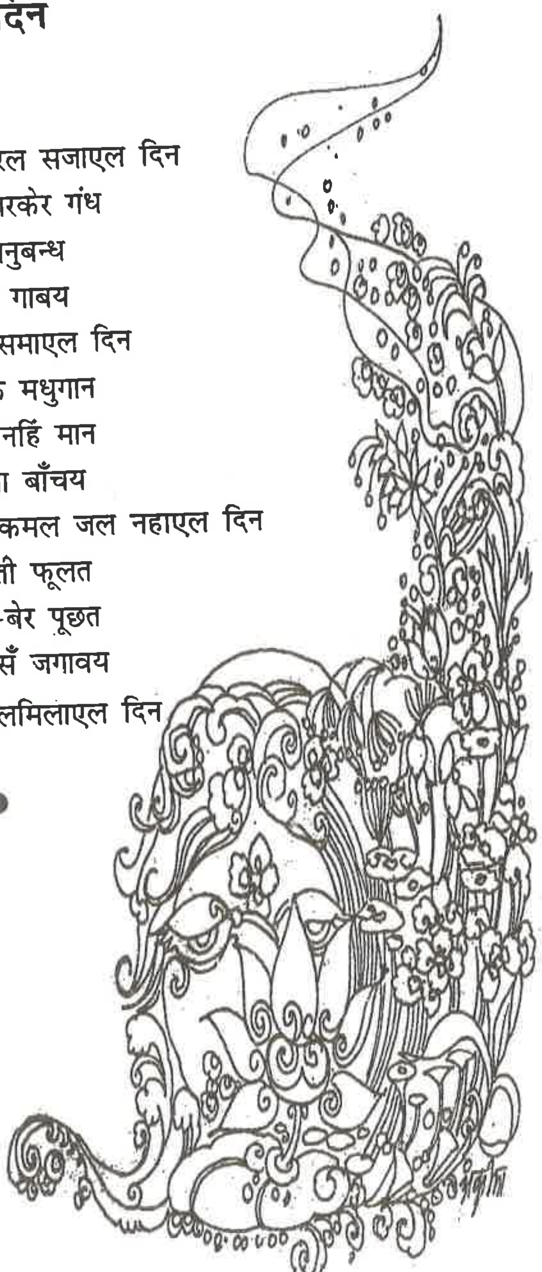

लाल मेघ

नील मे लाल मेघ ओझराएल
हमरा लागै ये
खिलल हैत अहँक आंगन कँचनार
किछु अनमन सन हैब अहाँ
आ केश हैत सब खूजल
ठामे बैसि चिरय पानि मे
कतेक बेर हैत डूबल
हवा फेकै अछि गंध चोराएल
हमरा लागै ये
पहुँचल हैत सनेसो कोनो दुआर
साँझक एकसर पहर उदासल
भीजल आँखि अहाँके
मोन पड़ल तसवीर कतेको
बीतल संग अहाँके
बहिना कहैत हैत मनुहाएल
हमरा लागै ये
लोक कहैत हैत कतेक बोल-विचार
फेर अहाँ कानल हैब
हाथ सँ मूनि लेने हैब आँखि
स्वप्न बनल हैत गीत
खोलिकऽ धागि गेल हैत पाँखि
कमलक पात एने टुसियाएल
हमरा लागै ये
अहाँ केने हैब अपने हाथ सिंगार

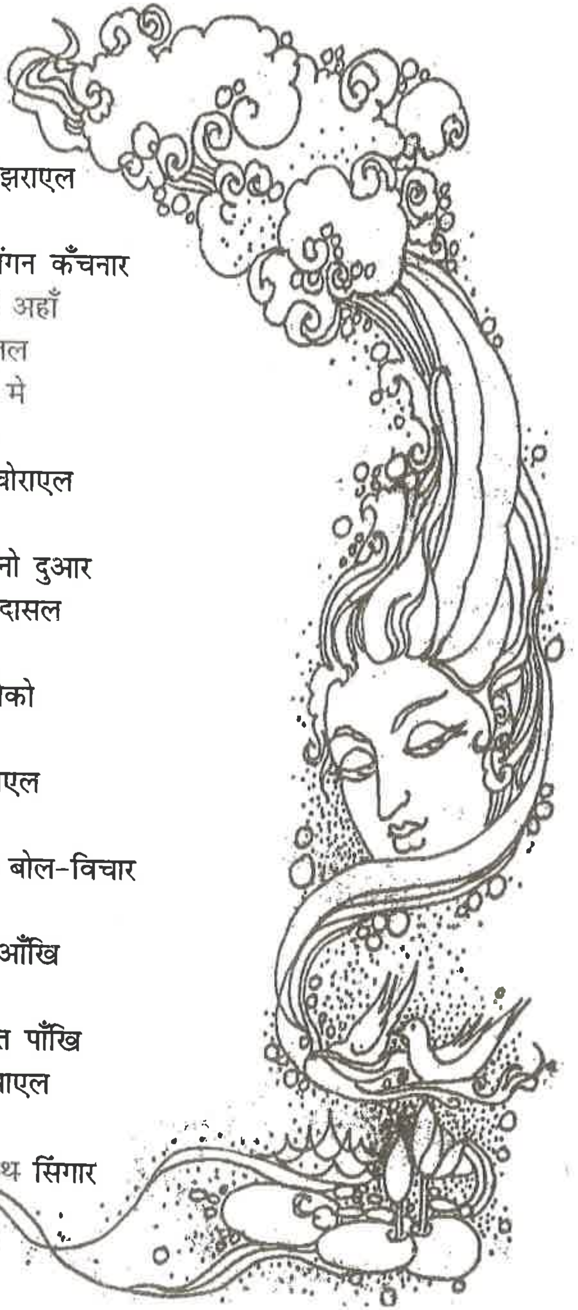

पूसक बादरि

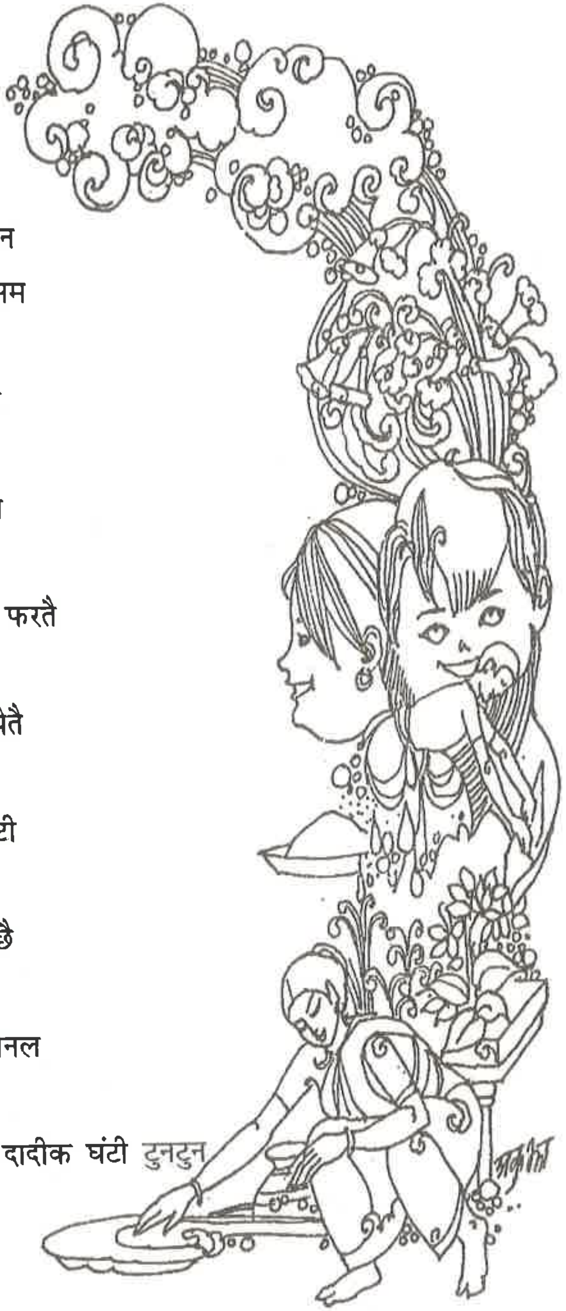

पूसक बादरि बरसय
मोती झहरय हम्मर आंगन
बरसय बुन्नी बुन्न झमाझम
बरसय चानी-सोना
भैया हम्मर धान अगोरय
भौजी नीपय कोना
ओलती धेने सुन्नरि माय
सुनयना लागय अनमन
भूखे नहिं मरतै फसलि फरतै
भरि जेतै बखारी
धिया-पुता कें मुँह हरियेतै
भातक थारी-थारी
बिछिया पिन्हने रानी बेटी
घर-बहारे रूनझुन
तुलसी-चौरा पर झरैत छै
पीयर-लाल कनेर
गामक हाट-बाट सँ कीनल
वंशी केर आकुल टेर
तनने ओहार आँचरकेर दादीक घंटी टुनटुन

सुन्नर नैनी माछ

कतेक बरीस जतन सँ पोसल
सुन्नर नैनी माछ
बाबा कहिया गिराएब महाजाल
धानक सीस लगय मँगटीका
पानक पात पटोर
टुह-टुह ठोर लगय अड़हुल सन
आकुल आँखिक कोर
घाट-बाट नहिं पैर रहय थिर
जालक मन बेहाल
गाम-गाम सँ आओत मलहा
पूछत पोखरिक नाम
हाथ लगाकें जल हिलकोरत
फूटत ओने मखान
पानिक सपना संग छोड़य नहिं
कहैत ललाएत गाल
नाकक मोती आँखिक रंग मे
जहिया सँ रँगि गेल
तरहथ पर पलास तपि जाइछ
आंगुर चानन भेल
जेना हेरेलहुँ सिनुरक वन मे
लगय दहों दिस लाल

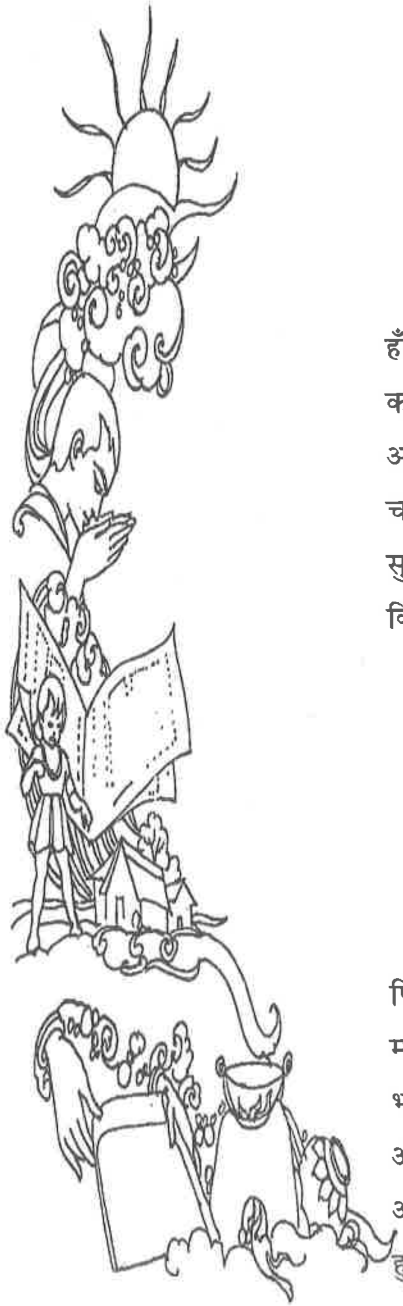

हँसी आओर नीन

हँसी भरल भोर लागै ये
नीन अछि साँझक नाम
मोन बहुत पड़इत अछि घर के
स्नेह आओर परनाम
हँसब छोटछीन बातो पर
कतेक काल धरि एहिना
अखबारो कें छीनि हाथ सँ
चाह धरेती बहिना
सुन्नर जिद पर सुन्नर तामस
किरिया पूर्णविराम
कनी-मनी झूठ आ झट दय
दस गूना बजनाय
कखनहुँ फूल, मेघ बनि कखनहुँ
मोमक खीर-मलाय
बिन गनती के रोटी परसब
बाबुक पहुँचब गाम
पिलसिन सँ लिखल देवाल पर
माछक संग मजूर
भनसाघर मे चूड़ीक खनकब
आँचर हरदि-सिनूर
अरिपन सन काढल आंगन मे
हुनकर देहक घाम

जागल आगि

चटकलक चिमनी मे जागल आगि
भाय रे, रंग लहू के उगल
मानै छी मौसम सुगंध केर
सबके नहिं भेटय
तालक फूलल रक्तकमल
सबहक मन नहिं बेधय
गूंग-बहिर बस्ती मे कोना हँसय
भाय रे, मौन अकास उड़ल
ऊँचबात करयवला
सब छोटे नहिं होमय
ओना धरम के परचारक
सब अन्हारे रोपय
ई जिनगी जे बीच धार डूबल
भाय रे, हाथ उठाकें बजल
कोना कहब दोष एकरा
ई जीबै केर बिसवास
खुलल-अधखुलल आँखिकें दऽके
रंगभरल आकाश
एक सपना हम देखैछी जागल
भाय रे, सुन्नर परब मनल

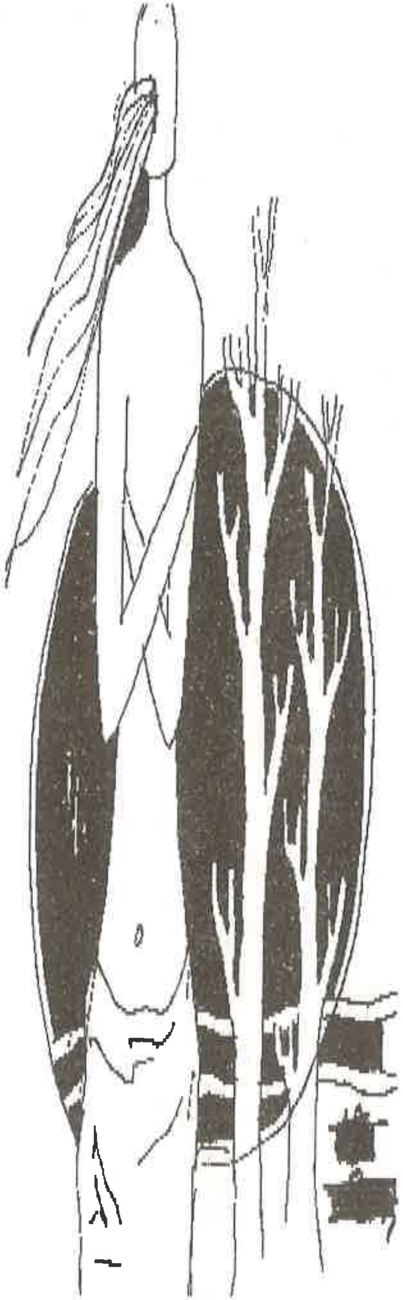

बारह सालक बच्चा

जिनगीक मोरचा पर ठाढ़ भेल
ई बच्चा बारह साल के
दोसरक खातिर अछि नींव बनल
ई खड़ा मकान करय
आठ पहर ई लगल काम पर
पीठक घाव सहय
खुरचि-खुरचि कें तेज करय
ई समयक सही सवाल के
सोनचिरय सन उड़य चाहय
ओ धोअल साफ अकाश पर
राजनीति भरमावय ओकरा
छापि कारी पोस्टर पर
काँचक गोटी चटकावय ओ
थामय लाल मशाल के
पैघ बहसक विषय बनल
तामस मे खौलि रहल
भाफ-भाफ बनि पसरि गेल
ओ सौंसे देश घुमल
आँखि सामने गड़ा देने अछि
ऊठल-सँवरल भाल के

हमरे नाम

एतबा जे किछु केलहुँ
सब पर हमरे नाम लिखल
विस्मित छी ई देखि
अहाँकेर बीच कतय छी हम
समाचार पर समाचार
अखबारो छापय
डिबिया उगलय झोल
घटना नहिं झाँपय
अन्तहीन यात्रा पर निकलल
बन्हल पैर छी हम
करिया तागा सँ बान्हल
ताबीज पहिरने
ई अकाल संदर्भ एना
के सिर अछि तनने
गामक फूलल अमलतास केर
कटल डारि छी हम
धँसल पैर दलदल मे
खेतक ठोर सुखाएल
घरक हवा दम घोंटय
कलसक कंठ झुराएल
सिमरक बाध वोन उड़ियाएल
गरम तूर छी हम

●

पुरइन-ताल

पुरबा उमगि-उमगि के झाँकय
दिन भरि पुरइन-ताल
बरसल-अनबरसल ई साओन
लागय बड़ वाचाल
लौटल अछि दिन फेर फुहारक
झूला पर के साथ
मोन होइछ हाथ सँ छूबी
बुन्न सजाबी माथ
नदी-नाल-पोखरि सब लागय
मुखिया के चौपाल
बाँहि मे भरय लेल आकुल
ई मनुहारक मौसम
लोकगीत सन अहाँ, अहाँकेर
नेह सहज मधुरिम
भालसिरी सन आँखिक जागय
जादू करय बेहाल
संधि-पत्र लिखबा लै आकुल,
जूही सन मुस्कान
तट सँ बन्हल नाह ई खूजत
चम्पा छोड़त मान
भोरक कंचन किरिन बुझाबय
रूपक रेशम जाल

●

एक-दू-तीन

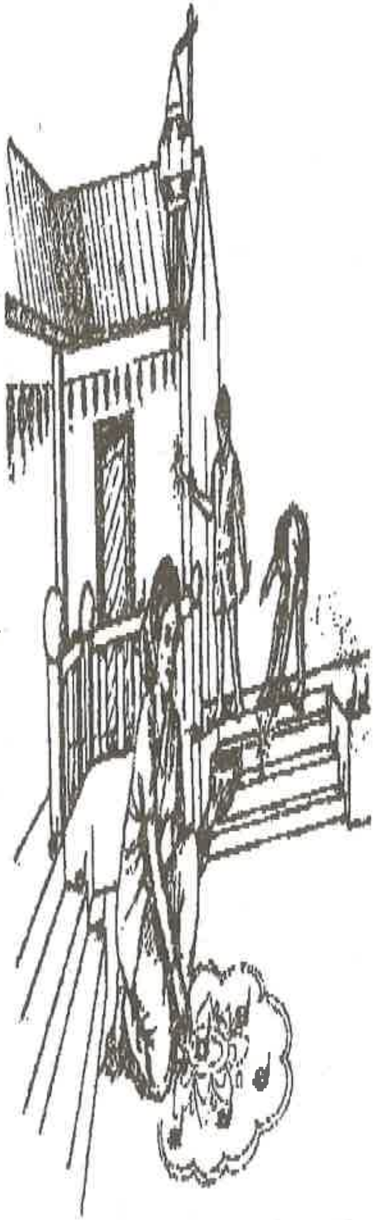

लिख हमर बेटा एक-दू-तीन
लिख-पढ़ि के पहिचान जमीन
भरल पेटवला करय जकर बड़ाय
मचल छै दुनिया मे भूख के लड़ाय
भूख समझाबय हर-फार-मशीन
दादीक लोरी मे गंगाक पानि
सूखल इनार आ चुबैत ई छानि
सोन हाथ सँ तू पाथर बीन
गाम भरक खेत लिखत छै जमींदार कन
हाड़ सुखबैत रही राति-दिन पहाड़ सन
छोटछीन सुखो न पेलहुँ हम कीन
अपन अधिकार कें तलास पैघ भऽकय
सीना पर वार कें हमेशा तू रोकय
तोहर कमाय ने लऽ जाय केओ छीन
दान-पून ढ़ोंग सब भने तू समझबय
सपनो मे रोटीक गाछ भरल रखबय
बचपन उगाबय दूध आओर नीन

●

एतेक सुख एके संग

खोलओं तँ कोन गिरह खोलओं
एक बन्हल चम्पाक फूल
दोसर मे मूँगिया अबीर
तेसर मे अतर भरल फाहा
चारिम मे अहँक तसबीर
एतेक-एतेक सुख एके संग
जीबओं हम कोन सुख जीबओं
डह-डह बैजन्तीक फूलब
आँखि मोहि हाथ नहिं आबय
भीतर इनार रंग घोरल
हवा मोनकेर गीत गाबय
फागुनक बरखा मे भीजल
बान्हओं तँ कोन डोर बान्हओं
रंगल मोनक एहिपुरहर कें
जुंनि लऽ जाउ कोनो वोन
साँझक सरोवर मे मुँदइत कमल
संगे कहुँ मुँदि जाएत मोन
कहइत-सुनइत अप्पन बात
बिसरओं तँ कोन बात बिसरओं

●

आजुक रौद

आइ रौद नीक जकाँ ऊगल
टेसू-वन लाल-लाल फूलल
तहे-तह गर्द भरल एहि किताबक पन्ना
ठाम-ठाम खरौंच लगल टाँगल अछि ऐना
कतेक बरख बाद फाँस खूजल
पानि महँक माछ साफ देखल
तोड़िकऽ राखि देलक बात जतेक भेल
मोमक कन्दील रहय बरकि-बरकि गेल
नाह खुलल दिनक मौन टूटल
बिरिछ पहिरने पहाड़ ऊठल
चुप्पीक हाथ मे मशाल रखने
धिया-पुताक हँसी-खुशी लिखने
गाम-गाम गहुम खूब फूटल
माटि-पानि दुनू हाथ पूजल

●

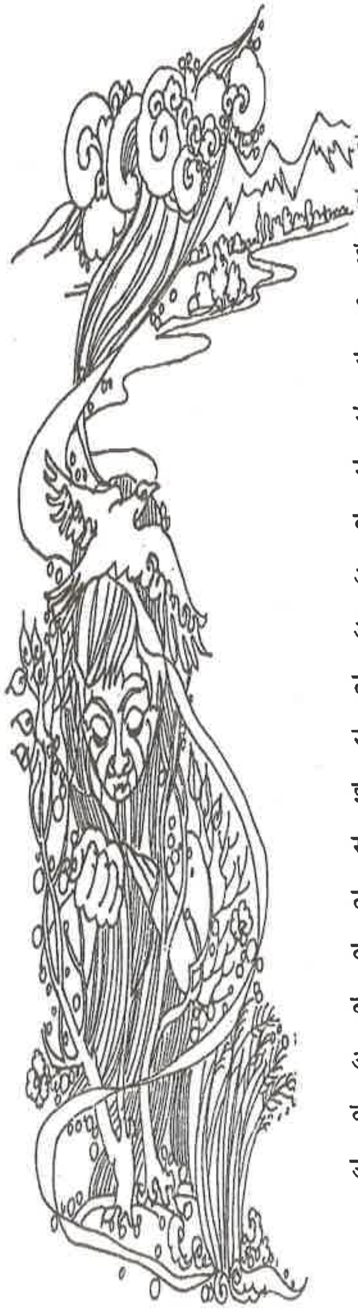

पँखुरीक धार

तरहथ मे तँ बन्न केने छी फूल कें
लहू कोना बहि गेल आंगुर कोना कटल
ई पँखुरीकेर कोर बिलेटक धार सन
भीतर धरि गड़ि जाय कोनो विरोख मे
जीहजूर मे सनल हवा ई थाकि रुकल
महुआ-नीम-पलास जरय एहि देश मे
माथ जतय रोपल देखल ओ झाम छल
कानन-भीजल आँखि अहाँकेर माथ झुकल
अपने गाछ बरफ सँ दबल पहाड़ कें
आध टूक रोटीक सलाम सलाख लगय
ठाढे फुँकइत शंख तार पतझार मे
सर्द राति मे सुजनी पिघलल लाह लगय
इजोत पिबैत अकास एहन निठाह छल
सोन चिरय उड़ि गेल पात सोझे डरल
ठाकुरबाड़ीक तुलसी, काँचक माछ सन
कहिया धरि जोगाएब दाबल साँस कें
बान्हल मुट्ठी सन हम कहिया धरि रहब
अमलतास सौंपब जे फुटल गिलास कें
कोनो बोझ नहिं रहल आइधरि अनभोगल
उड़इत कासक फूल घाटे-बाट गिरल

●

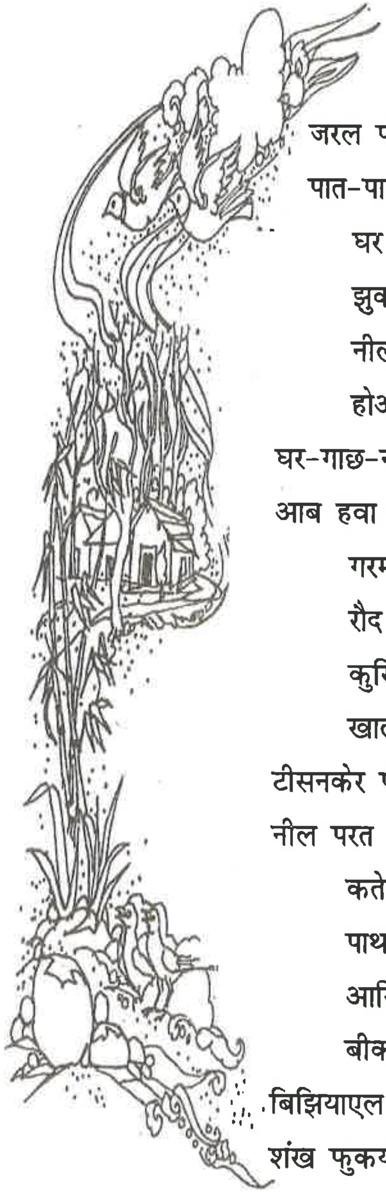

पाखी दिन

जरल पत्रक राखि जकाँ मौसम हमरा लागय
पात-पात सूखय वसन्त पाखी दिन उड़ि आबय
घर कियै नहिं घर सन लागय
झुकल शिरीषक माथ
नील झील सन आँखि आब नहिं
होअय कमल मन हाथ
घर-गाछ-नदी चुप जरइत जंगल सन दिन लागय
आब हवा नहिं बँसवारी मे सीटी सन बाजय
गरम करय अछि चिरय भोर केर
रौद मे अप्पन पाँखि
कुसियारक माथा पर बैसल
खाली-खाली आँखि
टीसनकेर पीपर सन भीड़ो मे एकसर लागय
नील परत असमानक जोतल खेत जकाँ लागय
कतेक जरूरी छल फेंकब
पाथर बान्हल जल मे
आगि धुँआएल पियब पसेना
बीकत नहिं छल मे
बिझियाएल लोहा सन टूटय कतबो जिद ठानय
शंख फुकय अछि चिरय हवा चिनगी घर-घर बाँटय

●

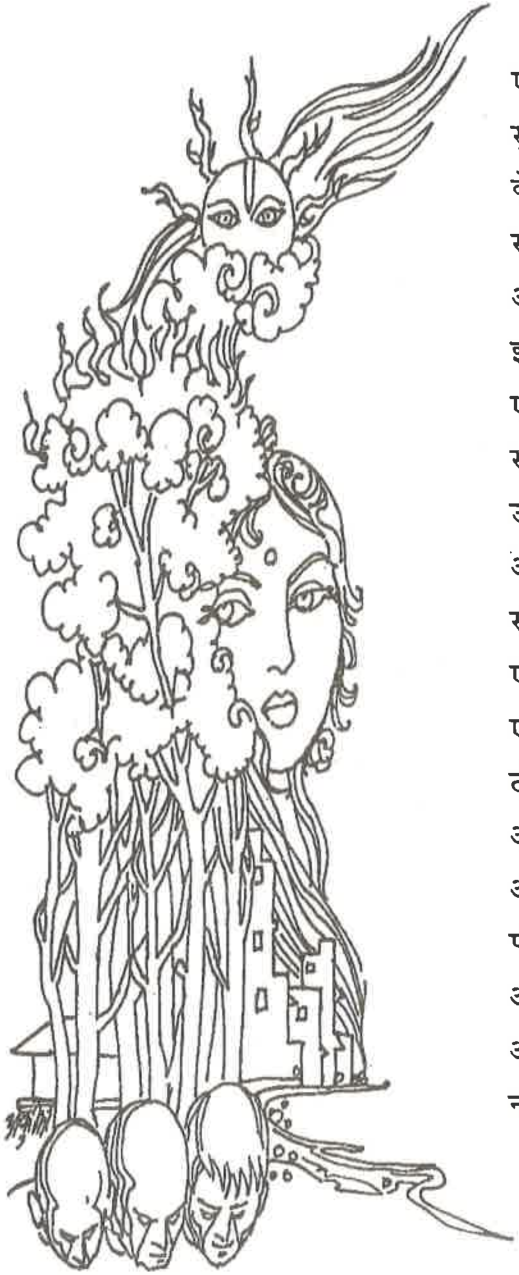

पलासवन दहकय

एतेक रौद नहि पीबू
सुरूज कें आँखि होय छै
देह-गंध मे मातल महुवा
सूति गेल अछि
अनकर नीन हराम बरोबरी
इहय कैल अछि
एहन मौन जुनि रहू
समय कें पाँखि होय छै
उज्जर कुरता सन टाँगल
अइ दिन-दुपहर मे
सबहक मोन धँसल पुल सन
एहि सुन्न सहर मे
एना हँसी नहिं सीबू
ठोर परदाग होय छै
अंग-अंग मे पुरवा
अपन राग पर गाबय
फेर पलासवन दहकय
आँखि-ठोर सगुनाबय
ओना भौंह जुनि करू
नजरि मे आगि होय छै

●

कूसक वन मे

जेना लागि गेल होय अगिनबान
ठाढ हैब मोसकिल अछि कूसक वन मे
क्यों नहिं कहत आब कोनो बात पुरना
जाली पर सूखल पात रहत अटकल
चून झरल भीत पर काँपत किरन ओहिना
आएत, लौटि जाएत जल-मेघ कसीदा कढल
देहक पोर-पोर दूखत ओसरा-दलान
मना करब हैत कठिन कंठ सँ तपन मे
बिनु कहने-सुनने गुजरत एने-ओने हवा
पन्नी सन कटत सुरूज लगातार
जंगली फूल गमकैत रितुकें कहने जाएत
गबाही मे हिलत ओसभरल छितरल सिंगरहार
पीठ पर टँगल रहत तीर चानिक कमान
कागज पर शोभा लाल करविल निर्जन मे
नागफनीक वन मे चानन उदास रहय
तुलसीक काढ़ा सन पीबि जाय जिनगी
बहैत लहू जकाँ निकलत कविता मन सँ
सबटा आबेग लहरि छीटि देत चिनगी
आंकुर फूटत सघन लागत परिवाक चान
बरखाक बुन्न बनि जैत रितुक नयन मे

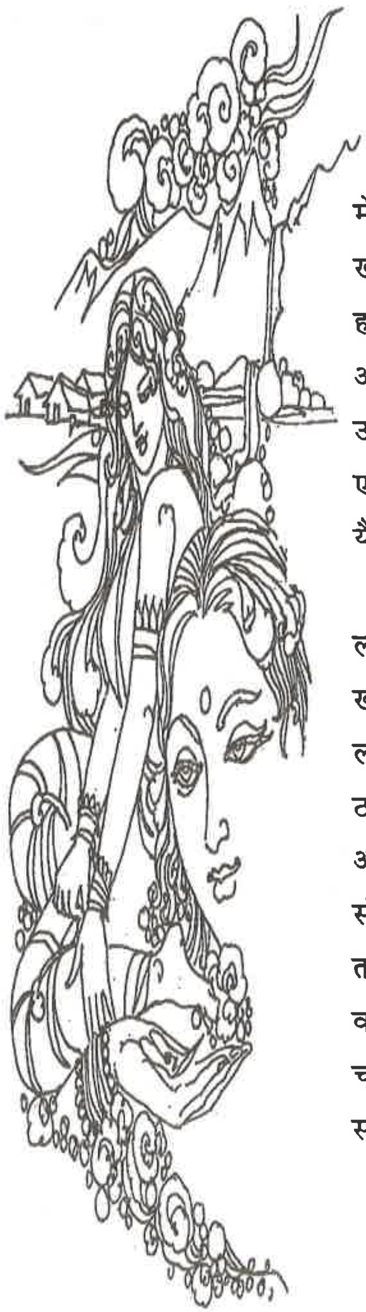

मेघ महँक रंग

मेघ महँक दू-चारि रंग जहिया बरसल
खेतक आँचर पर हमरे सबहक नाम रचल
हाथक छाप अकासक पन्ना पर लागल
आँखिक छाँह नदीक दुनू तट पर तानल
उगइत पानिक धार-धार मे गंध-हँसी
एतबे अपन खुशी अछि
यैह इनाम मिलल

लहू बहुत निकलैत हेतै सीसा गड़िके
खोह-बीच आवाज मरय कतबा दबिके
लाह-जकाँ पिघलैत जेठकेर घाटी मे
ठाम-ठाम हेरायल
अपने गाम रहल
साँसे परदा पर छीटल रोसनाय जकाँ
तरहथ बीच ममोरल सूखल पान जकाँ
वसन्त आबतँ लागय बैसाखक गंगा
चनकल काँचक चूरी
सारीकेर कोर फटल

किताब मे लिखल

लिखल जे गमकैत चाँदनी किताब मे
डूबि गेल आँखिकेर एक बुन्न जल मे
मरूआक रोटी लाल रक्तहीन हाथपर
लगय जेना आगि लागि गेल हो कमल मे
चम्पा, जूही, कनेर फूलय अछि आबो
मुदा कहाँ ओ सभ आब ओहन लागय
बाढ़ि आ सुखाड़क सपना अछि आँखि मे
मुँह रहय बन्न सिरिफ घटना टा बाजय
फाइल मे बन्न पड़ल एक ताव चन्द्रमा,
माथक पसेना बिक गेल कोनो छल मे
बिसरल नहिं जाइछ पीठक कारी निसान
कतबा मरि गेल कलम कविता के मारल
खोंता सँ उझकि-उझकि ताकय ये पाखी
कोना पलास-वन सँ ओ प्रेम-गीत भागल
धोआँ टा निकलय अछि एहि रोशनदान सँ
दूखल नदीक देह पथराइछ पल मे
घर सँ दलान धरि सिरिफ समाचार बुनल
कंठ भरि पानि मे की लहरत आँचर
कहिया सँ कीया मे बन्न सोहागक सिनूर
कमजोर बाँहिक आशीष करय थरथर
मधुबनी चित्र छपल एक खंड सारी
बड़ उदास लागय एहि भूखक हलचल मे

●

गरम-गरम भात

गरम-गरम भात जखन पात पर पड़ल
नवका दिन तखने ओसार पर उगल
साल भरिक बाद आइ कीनल ई कुरता
देह आ पेट बीच परय कहाँ परता
साबुनकेर फेन जखन हाथ सँ गरल
ताल भेल देह हँसी कमल सन हिलल
मोन अछि बाढ़ि आ सुखाड़क ओ गरमी
सपना मे गहुम-मूंग थारी मे करमी
लाल-लाल गमछा जँ कान्ह पर उड़ल
पुरबी-मलार सब मचान पर रचल
चमकल नहिं बेसरि पर आँखिकेर कथा
भूखक जंगल मे जरैत छल मनक विथा
एक टका मे नया रूमाल जे किनल
दिन जेना फागुनी निबंध सन लिखल

●

शालीनाक हँसी

कतेक कीमती लगैछ रौद
अपन छोटछीन घर मे
फलालेन छींटदार फ्राक पर
भोरक किरिन जखन पड़य
शालीनाक हँसी सँ नहाएल
सरदीक रितु गरम लगय
छोटछीन खुशी कतेक पैघ
लालसा रँगल पहर मे
अनेरे लागि जाइत अछि मोन
लोरीक धुन बुनल सपन
जागल मे भोर आ सूतल मे साँझ
इएह एक रोजकेर जतन
नीन भरल आँखि डोलि जाइछ
सुतलो मे मोनक लहरि मे
हाथ-पैर बनल गीतक छन्द
दरपन पहिरने आँखिक काजर
अहँक मुस्कानक डोरि बन्हल
उड़य शुभकामनाक आखर
खाली नहिं भेटय समय सोझ
एतेक अपन केओ नहि नगर मे
हाथक बलिया आ ठोरक लाली
बुनल अछि आशीष मे हजार
पंख-पंख मे लगय अकास रचल
इन्द्रधनुष उतरय दुआर
डेन झारि उड़य सोनपाखी
सुखक बरखा होय गाम भरि मे

●

अहाँ पुल जकाँ

अहाँ दुनू किनार बीच
पुल जकाँ लगी
हम नदी जकाँ बही
एक हँसी भोर–
एक साँझ मे रचल
दुपहरक नीन–
स्वप्न-कथा मे बुनल
सुरूजमुखी सोन चिरय
राति-दिन जगी
हम बिरिछ जकाँ रही
एहन खुशी आन बरख
आयल नहि छल
वंशी सन घरक हवा
गाओल नहि छल
आँखिक काजर–
ठोरक गीत मे पगी
हरिन, माछ आ दही
पानि पर गिरैत
रोशनीक धार सन
अहँक छाँह घर मे
हिलय सिंगरहार सन
एक गीत गूँज
अहँक रंग मे रँगी
नेह-लेख हम पढ़ी

●

अबीरक दोहा

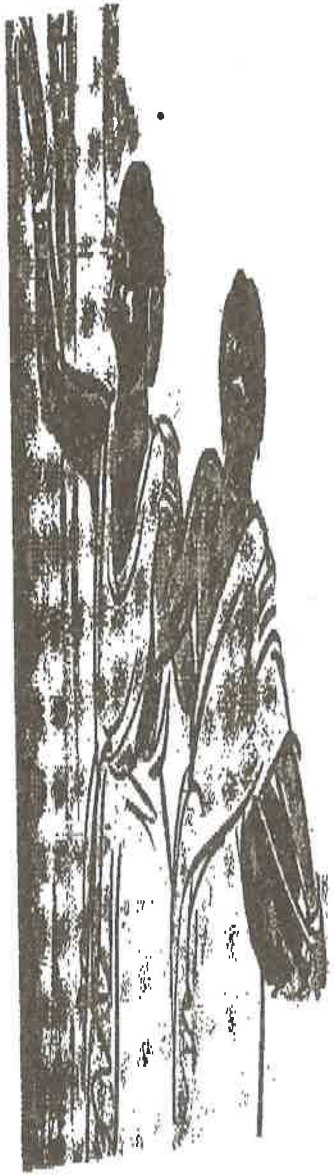

भरि-भरि हाथ असीसय फागुन
चैत मगन मन मे
रंगक कढल कसीदा देहरि
छापल घरक केबार
ठामहि ठाम अबीरक दोहा
लिखल करय मनुहार
आँजुर जोड़ल लागय ई दिन
आँखिक दरपन मे

तरहथ मेहदी सँ लिखल अछि
सुन्नर जोड़ी नैनी माछ
हँसीक डारि घर भरि मे छितरल
आस-भरोसक मोजरल गाछ
धारक माछक फुलकारी अनमन
रचय सगुन छन मे

सै-सै आमंत्रण सँ सींचल
नेहक रंग-सोहाग
ई केहन कोमलता बरसल
आँखि-आँखि अनुराग
हरियर पुरइन नयन पोखरिक
रौद हँसय वन मे

तूर जकाँ भीजल

एहि शहर मे अहाँ छी, हम छी,
आओर सभ केओ छी
मुदा लगैत रहय अछि हमरा
जेना कोनो कमी अछि
कहिया सँ डरक घर मे बन्न
इच्छाकेँ पास आनब
जरूरी भ' गेल अछि
शब्दक सही अर्थ जानब
आँखि जेना एखने थमल बरखा
बहुत भीजल जमीं अछि
पिताक आँखिक स्वप्न
बाँसक फूल सन लागय
कखन से झरि गेल चुप्पे
केओ नहि आइधरि जानय
पानि सन चौदिस जे बहय लागल
लोक बाजय मौसमी अछि
भीजल बहुत दिन तूर जकाँ
भारी लगय अछि जिनगी
एहि बरख निरमम जार मे
दूखय अछि फटल सलगी
सुख इहोटा होइतय अहाँकेर
आँखि मे कोनो नमी अछि

अबीरक दोहा

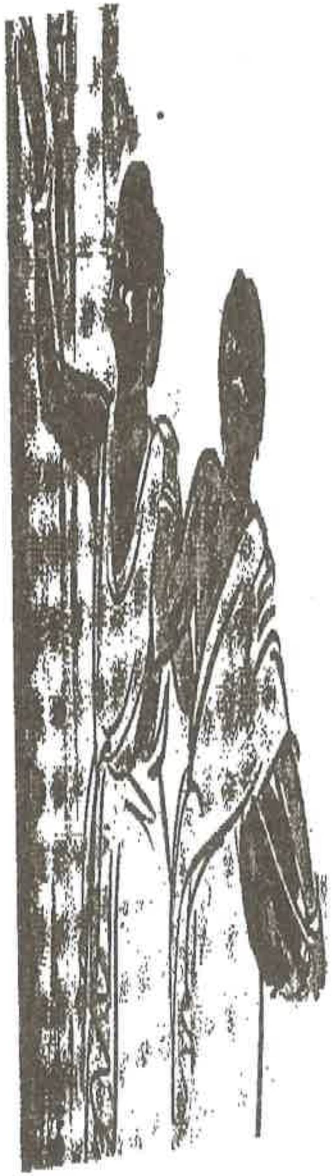

भरि-भरि हाथ असीसय फागुन
चैत मगन मन मे
रंगक कढल कसीदा देहरि
छापल घरक केबार
ठामहि ठाम अबीरक दोहा
लिखल करय मनुहार
आँजुर जोड़ल लागय ई दिन
आँखिक दरपन मे

तरहथ मेहदी सँ लिखल अछि
सुन्नर जोड़ी नैनी माछ
हँसीक डारि घर भरि मे छितरल
आस-भरोसक मोजरल गाछ
धारक माछक फुलकारी अनमन
रचय सगुन छन मे

सै-सै आमंत्रण सँ सींचल
नेहक रंग-सोहाग
ई केहन कोमलता बरसल
आँखि-आँखि अनुराग
हरियर पुरइन नयन पोखरिक
रौद हँसय वन मे

तूर जकाँ भीजल

एहि शहर मे अहाँ छी, हम छी,
आओर सभ केओ छी
मुदा लगैत रहय अछि हमरा
जेना कोनो कमी अछि
कहिया सँ डरक घर मे बन्न
इच्छाकेँ पास आनब
जरूरी भ' गेल अछि
शब्दक सही अर्थ जानब
आँखि जेना एखने थमल बरखा
बहुत भीजल जमीं अछि
पिताक आँखिक स्वप्न
बाँसक फूल सन लागय
कखन से झरि गेल चुप्पे
केओ नहि आइधरि जानय
पानि सन चौदिस जे बहय लागल
लोक बाजय मौसमी अछि
भीजल बहुत दिन तूर जकाँ
भारी लगय अछि जिनगी
एहि बरख निरमम जार मे
दूखय अछि फटल सलगी
सुख इहोटा होइतय अहाँकेर
आँखि मे कोनो नमी अछि

आँखि मे जिनगी

देखैत रही पाथरोक पार–
जिनगी छल आँखि मे जखन
पता नहि कोना चलल हवा
उतरल वसन्त भेल लोक
पात-पात झुराएल कथा
एके संग शुरू खुशी-शोक
कटल पाँखि आ सुखैत धार
कुहेस उगल माथ पर जखन
दूरि सँ चलियोक' आई गाछ बनल
माटि पर लिखल ओकर पैरक निसान
जकरा ओ देखि सकय बेर-बेर
दुख तनल जेना धनुष पर कमान
भुक-भुक करैत लालटेनक अन्हार
तोड़ि दैत अछि बजारक थकन
धोआँ सन पसरल साँझ कँ
एक बुन्न इजोतक छै तलाश
दुपहरे मे एहि जिनगीक ठाम-ठाम
बनल जाइत छी हम सभ इतिहास
एहि बाटे कतेको घोड़सवार
उड़बैत धूरि चलि गेला मगन ।

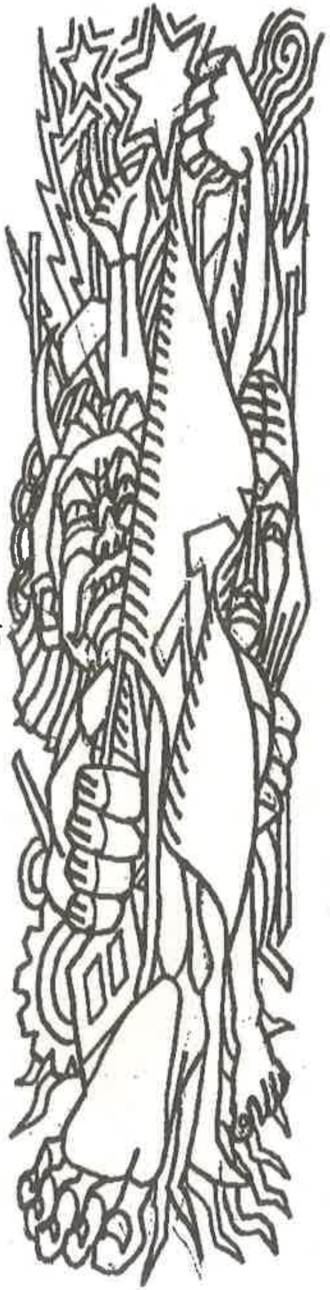

रितुक रंग

ई हवा, फूल मौसम
भरि आँखि सँ जोहब हम
ई सपना-सेहन्ता बुनै के
पहर अछि
पात कमलक कखन सँ उदासल
लहरि मोन कहिया सँ एहिना पियासल
जेठक ई दुपहर तपै के
पहर अछि
पानि समुद्रक छुबय माथ सबहक
एको पल ने ककरो देखै अछि ई औझक
घाटीक मौन अधर पर सजै के
पहर अछि
आतप ने बरखा न सरदी-बसाते
जकरा लए किछियो ने धरती-अकासे
एक चुटकी रौद लए जिबय के
पहर अछि
रितुक रंग बदलव कतेक कठिन बुझाबय
फूल, पात फुनगी सब धार मे बहावय
तइयो टोल मे हवा के नचै के
पहर अछि

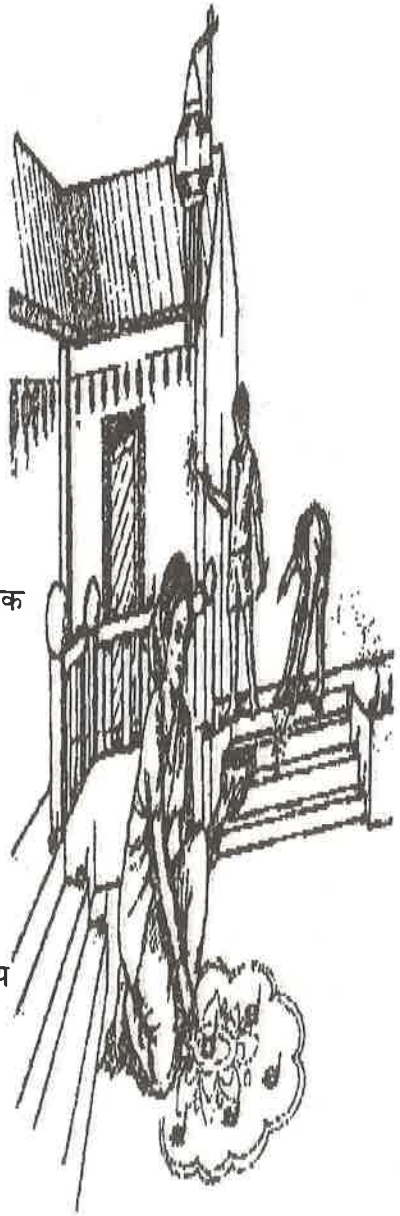

छोट-छोट खुशी

छोट-छोट खुशियो सँ जिनगी
परव-तिहार लगय
भोरे-भोर नरम रौद
जहिना दरवाजा खोलय
थपकी दैत हवा ताजा
जँ कास जकाँ डोलय
पछुवारक फूलक खुशबू सँ
गीतक तान जगय
हुलसि उठय मोन धनखेतक
स्वप्न कतेक अँखुवाबय
प्रेमक पाती लीखि चिरैया
गंधक चूनर लहराबय
मेघक जलकण सँ बेला केर
हासक लोर झरय
साँझक ठोर पर दुह-दुह सन
गुलाबक लाली होयत
मीठ-मीठ सपना सँ बूनल
लहठी मंत्र उचारत
प्रेम भरल आँखिक भाषा मे
मनक अकास खुलय

●

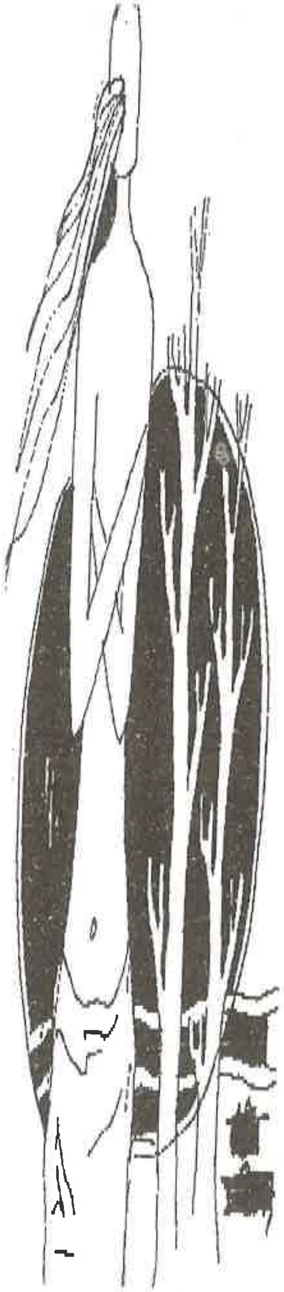

निशि बीतल

जागू, निशि बीतल अय सजनी !
नहुँ-नहुँ प्रात-समीरन सिहकय
पाबि परस रोआँ सब सिहकय
नरगिस से खिलि गेल
धरा पर पसरल अय सजनी !
कुहुकि-कुहुकि पिक हूक जगाबय
चातक विकल हृदय हहरावय
अरुण किरण गरहार
साजि नभ आयल अय सजनी !
पुष्पक संग अलिक परिरम्भन
ज्योतिर्मय भेल जगतक जीवन
चलय बटोही बाट हास-
नव पसरल अय सजनी !
विहग सोर कऽ सुप्त जगाबय
निज अनुभव संदेश सुनाबय
'त्यागू आलस-नीन' कखन सँ
बाजल अय सजनी !
ई न बेर थिक निद्रा-मानक
आयल अछि छन शुभ जागरनक
कखन करब गृहकाज समय
अति बीतल अय सजनी !

●

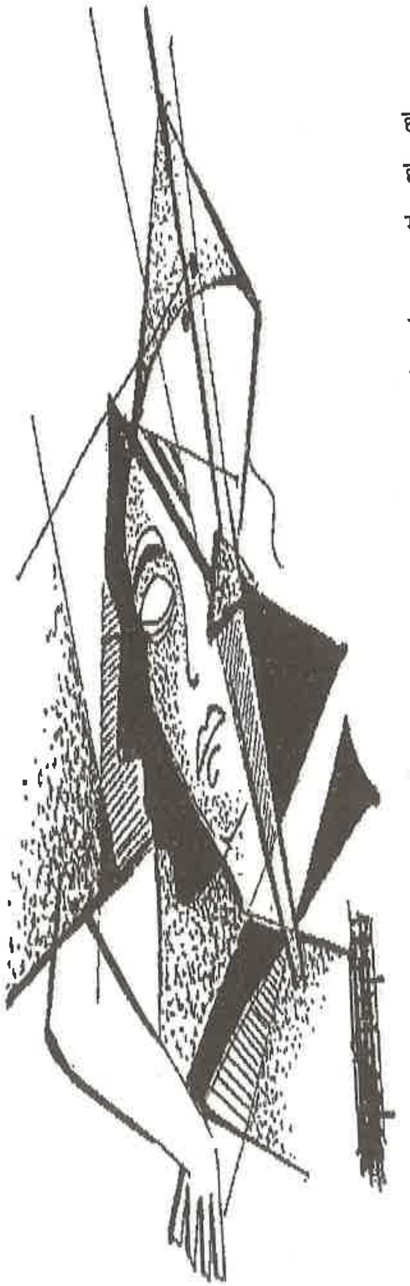

हम खेतिहर-मजूर

हमरे सँ सभ दुख होएत दूर
हम छी खेतिहर, हम छी मजूर
मेहनत सँ हम धरती कें
बनबै छी लाले लाल
जखन माथ सँ चुबय पसेना
मौसम उठबय हाथ
चट्टानो पर उगय फसिल
जँ हर हो सबहक साथ
खेतक धानी चूनरक संग
लहराएत पोखरि-ताल
हरियर फसिल सुखाएत, आँखि मे
शोणित रहत उतरिते
जरल अलावक आगि जकाँ
भोरक किरिनो रहतए उगिते
अप्पन तानल तरहथ सँ सभ
हिस्सा लेब निकालि
दाना भरल जाल आगाँ मे
भूखक सै आमंत्रण
रचि कें नव-नव भरम हँसए अछि
कुटिल हँसी मौसम
ताजा हवा लेल एखनहि सँ
हम सब बहुत बेहाल

●

आँखिक अकास

फूल होइत छै, पात होइत छै
से सुखलो बरसाति होइत छै
अलगनी पर टाँगल आंगी सन
किछु इन्तजार–बात होइत छै
कहिया सँ एके रंग यादि रहय
कहिया सँ एके नाम मोन गाबय
चम्पाक पंखुरी पर लोर सन झरल
राति ई कपूरक काजर सन लागय
नदी पाट चिक्कन होइत छै
किछु काँटो बड़ अप्पन होइत छै
अड़हुलक देह जखन नहि फूलय
कोनो मौसम मोम होइत छै
साँझक ई लाल मेघ-सिनूर
चानीक औंठी मे मूंगा सन लागय
मोरक पाँखि जेना किताबक पन्ना मे
कोनो गीत छन अपना कें दोहराबय
पंखुरीक नोंक तेज होइत छै
कखनो कें मोन बोझ होइत छै
एना मे कतबा खरोंच पड़ि जाइछ
दुपहरक छाँह सोझ होइत छै
धुँआएल खिड़कीक छऽड़ जँका
घरक दियैठ कारी लागै अछि
लाल छत मे पड़ल निसान जेना
अपन आँजुर उदास लागै अछि
आँखिक अकास एकसर होइत छै
कील टूटल बेसर होइत छै
एहि पार ओहि पार गंध नदी
बान्ह बिना ऊसर होइत छै

●

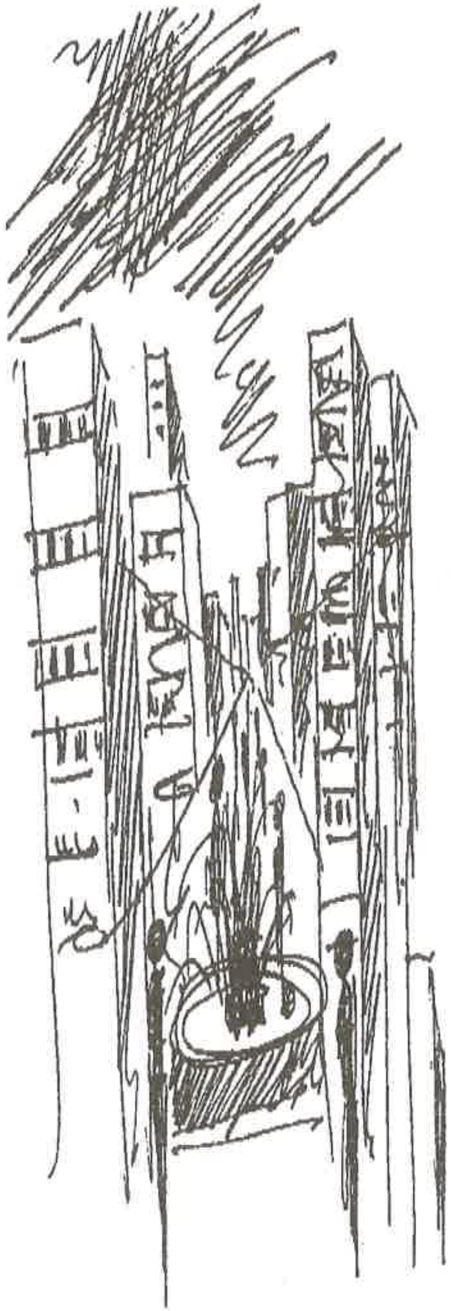

गामक लोक

एना आब नहि घुरियाएब
आगाँ बढ़ि खोजब गे ठाम
कतेक तपत मरूथलक रेत
दोहरत मौसम केर छल
महुवाक वन मे भरि वसन्त
घेरत सियाह भेल बादल
बिन भेल भऽ जाएत सब किछु
आन लागतै अप्पन गाम
आगा-पाँछा यादक ढेरी
बाँहि मे खुशबू रहत बन्हल
रितुक इन्द्रधनु-हवा रोकत
मन अकासदीप सन टँगल
आंगुरक पोर दुखि जाएत
घुमड़त ओ परिचय परनाम
सूर्योन्मुख होएत ई अन्हार
गड़त नहि हाथ मे काँचक नोंक
आ विरुद्ध हवा सँ लड़ैत सपना
रेत सन नहि लागत गामक लोक
हँसी आनब जिनगीक नाम

●

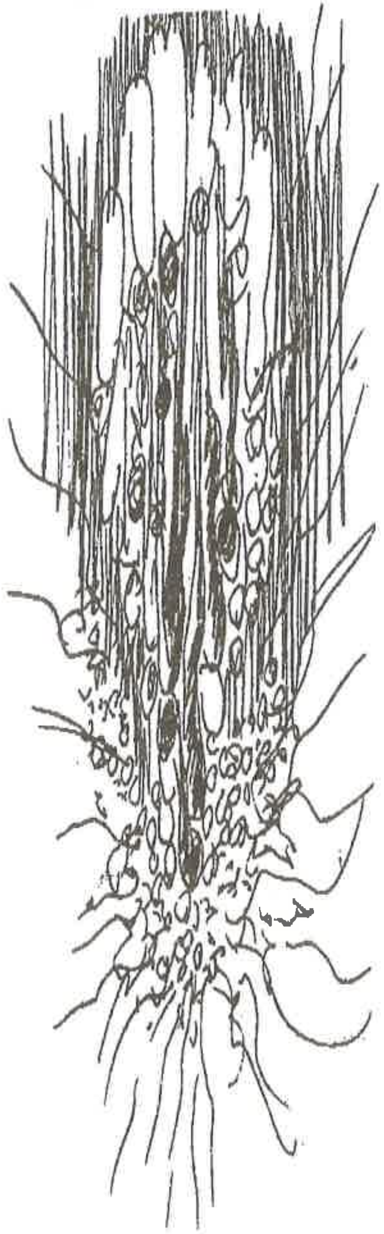

अँखुवाएल फसिल

सपना सब बिका गेलय समयक नाम
मोन मे पलैत छै एखनहुँ
खुशी एक छन
परछाँही सन भागैत छै
संग-संग कोनो मन
एकपेरिया रस्ता आ बिसरल ठाम
एक कात सँ उठय धोआँ
झँपि जाइछ लतरल फूल
मूनि लैत अछि पलक
बाँहि मे बन्हल अकासक कूल
सोर करय घाट-बाटे परिचित गाम
महुआ सन टपकैत ओ पहर
की जानी गेल कतय
जिनगीक ठोर सँ गायब अछि
मुस्कानक जीवित लय
मुरझि गेल अँखुवाएल फसिल तमाम
दुखैत मर्म पर बड्ड नीक
लागय आभारक साँस
जीयब कतेक सहजभ' जाइछ
छूटय समयक चाँस
गीते सँ होयत ई जिनगी अभिराम

●

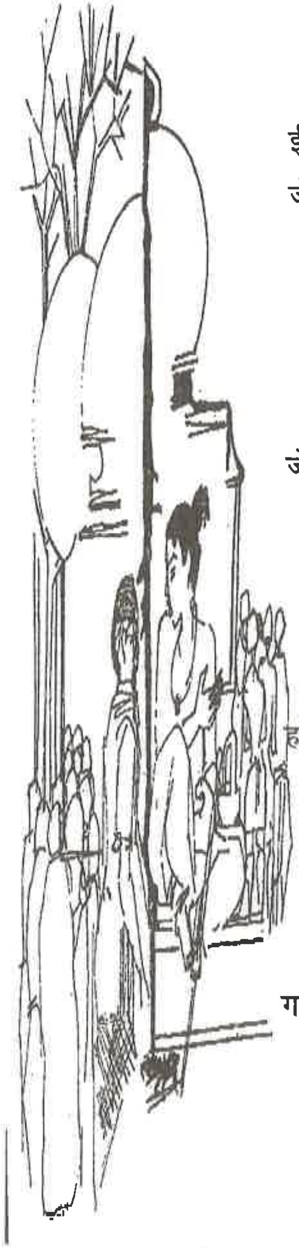

पानिक धार

ई छन भरिक हँसी रेशम केर फाहा जकाँ लगय
जेना पानि पर गिरइत उज्जर पानिक धार लगय
दिन भरिक चुप्पी पर अखने
हुलसल आँखिक मोहर
जिनगीक मूल कथा मे लागय
पन्ना जोड़ल दोसर
जेठोक दुपहर हरियर बाँसक छाँहो नीक लगय
गाछ जेना रौद पछुवारक
भरि-भरि सूप लुटावय
मोनक खुशबू आओर खुशी कें
मेहदी जकाँ रचावय
हरियाली पर हाथ देने धानक मुसकान लगय
धरतीक सपनाकेर अंकुर
जिनगीक बनल खुशी
खेतक आँखि देखि चौरा पर
नाचल अछि तुलसी
गामोक बेटी सबहक खोंइछा सुख सँ भरल लगय

इन्द्रधनुषी छोर

नहि बान्हत साओन अकासक इन्द्रधनुषी छोर
रितु पर झुकलं सुरभित छाँह
तुहिन मन गंध घेरल बाँहि
कोना जोड़तय अलस रंगल किरन केर डोरि
मोनक मोखा पर जरैत स्वप्नक दीप
अनबजल रहय स्निग्ध आँखिक सीप
रौद लाल भेलय संकेतक कनेरी कोर
नाचय जखन-जखन जल मे मीन
लगय लेइछ दुनिया खुशियो के कीन
उज्जर हँसी सन नीक होइत छै त इजोरिया भोर
आसंगक कमल खिलत नेहक सेंवार
अबीर सन मोन उड़त अंगना दुआर
प्रेमगीतक छन्द जकाँ तखन लागत नदीक सोर

प्रतीक्षाक पूस

आह कें शब्दो नहि दी
एहन अछि मजबूरी
ई धोआँ, ई बादलक देश
कतेक मोसकिल जियब
खुजल खाली तरहथ मे
सपना लेने रहब
आँखि कें लोर नहि दी
एहन से लाचारी
एहिना सोचैत गुजरि गेल
दिन-रातिक जुलूस
पलक पर टँगल रहल
प्रतीक्षाक पूस
बात कें तूल सेहो नहि दी
एहन अछि बेकारी
कहुना टरैक नाम नहि लै
दुखक ई पहाड़
आगि लगल टेसू वन मे
सन्नाटा घाटीक पार
फूल कें छाँहो नहि दी
एहन तँ वफादारी

•

हँसीक पाँखि

हम ओकर की करू
फूल जे खिलि आबय अछि बन्न नयन मे
रंगक सन किछु गमक
पहिल आँचर मे बान्हल
अर्थक सन किछु शब्द
सुधिक पन्ना मे जागल
हम ओकर की करू
गंध जे उड़ि आबय अछि मंद पवन मे
एखनहुँ चमकि जाय मोन मे
हिरन भेल ओ बात
बीतल छन फेर-फेर घुरि आबय
जल-कन पुरइन पात
हम ओकर की करू
पाँखि हँसीक उड़ई अछि नीन-सपन मे

•

उजरल प्रतीक्षा

जतय-जतय रोपल गेल आम
फूलल अछि ओतय बबूरक वन
सुरूज उगइते लहकि जाइछ
बजइछ तेज करखानाक सीटी
राति-दिन आँखिक नीन उड़ि जाइछ
पाथर सन गरय पैर तरक माटी
लोहाक लेल बचल बड़ काम
दूबि-धान सँ बहुत ऊबल मन
दुपहरि भरि घेरय अछि धोआँक बादरि
घंटीक पहिने भूख-प्यासक मनाही
सड़क पर बिछल ईंटा जकाँ लोकसब
बही मे दर्ज नहि होइछ तबाही
आगि धरि मिलय नहि बिना देने दाम
डूबैत जहाज सन भारी छन
सस्ता बड़ छैक घृणा आओर द्वेष
जरूरति सबहक पसरल अछि देह
फटल-फटल आँखि मे उजरल प्रतीक्षा
धूरा सन उड़ल प्यार आओर नेह
जिनगीक आँखि मे लिखल नाम
घुटन पीड़ा नहि आँकय दरपन

●

फूलक ओहय अर्थ

मोन एना कऽ ऊबल
आय धरि कतहु नहि लागल
झगड़ैत इच्छा सभ सूति गेल
नैन बाट भटकैत दूखि गेल
बाट-घाट पसरल इजोरिया
मोनक उदासी मे डूबि गेल
लालसा एना कऽ सूतल
कोनो उपाय नहि जागल
कमल-वोन सौंसे सुखाएल
तेहन जोर भेल तुहिन-पात
एक लहरि ताल के पहिरलक
नुकाएल सुनतहि हवाक बात
जिनगी एना कऽ डूबल
हास-हर्ष चुप्पे सँ भागल
मौसम नहि बुनैछ आब
गंधक तेहन कोनो सिलसिला
फूलक ओहय अर्थ नहि होइछ
शब्द मात्र सिरजैछ बन्द किला
नदी एना कऽ सूखल
स्नेहक संदर्भ रहल टाँगल

●

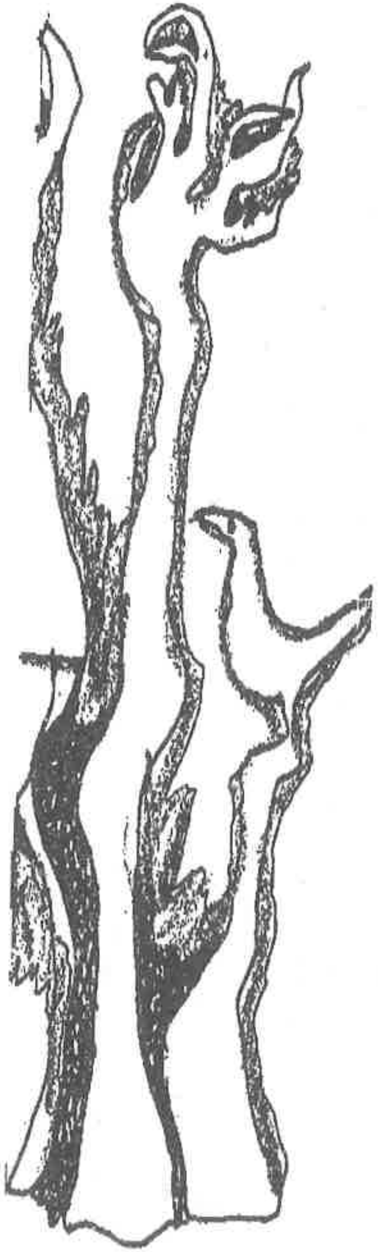

रोसनीक लकीर

चलू संग गंगाक लहरि फेर गनी
सीढ़ी पर बैसि धूपबाती जराबी
पानि पर दीपक कतारो सजाबी
मंदिर ध्वनि हाथ मे जल भरि सुनी
डाली मे चम्पा सन मोन कँ बहाबी
तट पर बन्हल खाली नाह छूबि आबी
स्वप्न केर सूत जिनगी कँ पकड़ि बुनी
रोसनीक लकीर कँ दूरि धरि निहारी
आँखिक आँजुर मे स्वप्न-सुख सम्हारी
उदासीक कोनो कथा आब नै गुनी

●

टूटैत नीन

गुलमोहरक डारि-डारि लहकि गेल
जिनगीक आँखिक स्वप्न गमकि गेल
आँजुर मे अहसासक रौद एना राखल
लहरैत फसिलक फुनगी सन लागल
फागुनक हवा पहिल दिन बहकि गेल
कहिया सँ एके बात मन मे बड़ पीरय
बादरि अबीर भरल बीच बाट घेरय
ई हजार घाटिक मौन ठमकि गेल
मौसमक बदलैत हवा बहुत नीक लागय
खेतक टूटैत नीन सेहो गीत गाबय
देखत सब आगि कोना दहकि गेल

●

जिनगी मुक्त होएत

बहुत चीज होइछ देखाबा लए
धोअल-मैल अकास
बान्हल या बहइत जाइत जल
छत पर छितरल कास
खिड़कीक जाली पर रूकल अछि
ढेरक ढेर इजोत
गुलदस्ता मे मोर पंख पर
उतरल मोनक सोच
एके संग देखय छी झरइत
फूल आ सूखल घास
ओने पुरान कलेन्डर मे
गहुम-मूंग लहरय
विज्ञापन मे हँसइत बच्चा
पाखी जकाँ उड़य
फेर आओर आन किछु देखब
चुप-चुप रहब उदास
बन, पहाड़, गाछ, चिरैयक
चर्चा होइत रहत
एने लुटल खेत-खरिहानक
खबरो बहुत छपत
जिनगी जहिया मुक्त होएत
सन्धि बनि जाएत समास

●

फागुनक रथ

थाकि गेल नदी, हवा सेहो थाकल
रूकल नहि तइयो रथ फागुन के
सुरूज तँ सुरूज होइत छै
किरिन तनि जाइछ जेना कमान
जरय लागय जखन जंगल
जरय टेसू आ नीम समान
बहुत उदास बच्चा किछु जेना कानल
रूकल नहि तइयो पथ फागुन के
रोसनीक आँखि नहि मूनू केओ
नीक नहि बनब खजूरक गाछ
अपने छाँह मे सुस्ताउ वरू
लिखल नहि हैत ककरो माथ
गामक ठोरक ओ लाली लगय उड़ल
रूकल नहि कनियों जस फागुन के
खेत मे गाबय मूंगक बालि जेना
लहलहाएत हरियरी मे उगल बिरहा
छंद मे गुनगुनाबैक काल एना
रेत सन हाथक सभ किछु गेल दहा
निश्चय जियत जिनगी ई प्रन ठानल
थमल नहि तइयो दिन दस फागुन के
रोसनीक छाप दियैठक तेल मे
ओकर मेटब न संभव हैत कहियो
प्रेमपत्रक आखर सब भने बिखरय
टूटत नहि ई मनक अनुबंध कहियो
पाखीक पाँखि मे दिनक उड़ान बान्हल
बादरि बीचे हँसय चान फागुन के

●

सुन्नर नयन

कोमल मन गंध-पवन
कतय-कतय डोलय
फूलक कनखी पर
हामी भरि टहनी
खोलि गेल छन मे
सबटा अनकहनी
फूलक तन नील गगन
मंत्र गीत बोलय
स्नेह सँ छुअल घोघट
झिलमिल कोबरक दीप
मोखा पर रंग भरल
लाजे टह-टह दू सीप
सुन्नर छन सान्द्र सघन
पाँखि नवल खोलय
कँचनारक गंध भरल
रातिक ई बेर
चानीक महीन तार मे
गुँथल हो कनेर
गीतक ई सुन्नर नयन
सहज रंग घोरय

●

मौनी मे लाल चम्पा

ठुमरी सन राति हमर सिरमा मे बाजल
सरदी मे बूनल इजोरिया से जागल
गेरुआ पर काढ़ल कसीदा जकाँ
समयक ई हिस्सा लागय
हरियर मौनी मे लाल-पीयर चम्पा
तरहथ मे हवा जागय
जिनगीक सुजनी ई सिनेह संग तागल
नदी पहिरने सुन्नर लहरि झूमर
फेन उठय बीच धार सँ
बालु भरल एहि सुदूर घाटी मे
केओ उतरय पहाड़ सँ
नहि रहत बीस बरखक हँसी आब दाबल
गाछे-गाछ टोना जगबैत हवा
ओमहर सुगंध बूनय
गोर माथ पर एक बुन्न बिन्दी सन
एक सृजन-छंद सुनगय
आंगुर मे हीराक ओंठी जकाँ लागल

●

जिनगीक लेल

काँटे आय चुनू की होएत
फूल बहुत चुनलहुँ
की दऽ देत अहाँ-हमरा कें
भागि रहल जिनगी
ओ सब खुशी मनाबथु जिनका
सभ किछु दै मँहगी
एकाधे सुखक लेल एना तँ
दुन्ना दुख सहलहुँ
आस तिहार खूब रचाओल
सपना काढ़ल बड़का
आँखिक सुखक संग सगुनल छल
कानक दूनू झुमका
राति-राति भरि झीलक चानी सँ
कते जाल बुनलहुँ
दरकय लागल सतह अन्हारक
फेर ठाढ़ि हरियाएल
जिनगी लेल लड़ैत कालो
समयक मुंह मुसकाएल
सुखक ई नागमणिक सपना मे
बालि जकाँ हिललहुँ

तामस उमड़ल धार

रोटीक बदला गोली के बौछार
पंडीजी यौ
कोना भेलय अहि देशक बंटाढार ?
दादा भूखल, बाबू भूखल
घरके पूत कमाऊ भूखल
सब कें आँखि देखाबय ठीकेदार
पंडीजी यौ
कोना करेबय देशक नैया पार
कोट-कचहरी पुलिस-दरोगा
सब खोजय पैसाके दोगा
लहू बहय छै पानि सन बीच बजार
बाबूजी यौ
कोना कटतय साँसक बन्हल अन्हार
दालि संग महग छै नूनो
पेटक लेल सुखाबी खूनो
जीबय नहि दए ई जालिम सरकार
भइयाजी यौ
कोना उठयबय साँसक बोझ पहाड़
सौंसे देश चलय चन्दा पर
कारी कानूनक फन्दा पर
भूखक रस्सी बान्हल हाथ हजार
बहिना सब हे

कोनाक सहबय हम सब कष्ट अपार
अहाँक खातिर महल-अटारी
हमर उजारल डीह घरारी
दुश्मन लागय अहाँ सबहक रखवार
मालिकजी यौ
कोना बन्हतय तामस उमड़ल धार
आब न शोषण हमसब सहबय
भूखल काम न ककरो करबय
हँसतय सबहक बच्चा आ नदी पठार
नेताजी यौ
आब नहि करियौ देशक बंटाढार

●

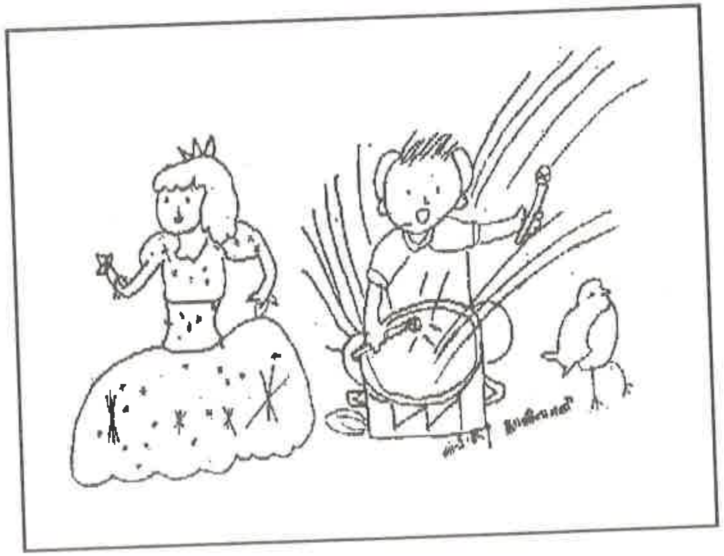

धार पर रोशनी

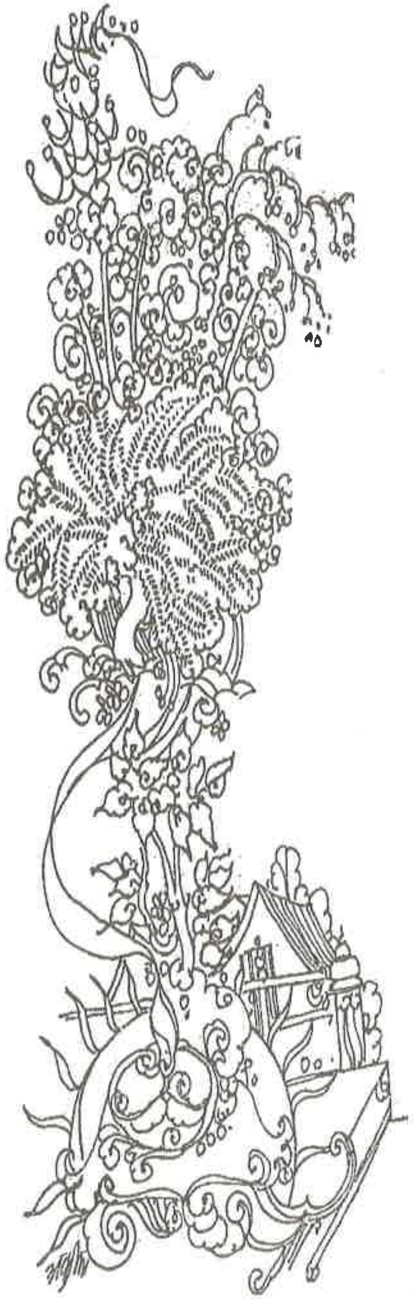

आबि गेल चानीक दिन
आबि गेल सोनाक दिन
आबि गेल फागुनक टोनाक दिन
बनितहि हाथक पुल जेना
धार पर गिरल रोसनी
आँखिके किताब पर छपल
गुलाबो लाल मौसमी
आबि गेल आन्हीक दिन
आबि गेल पानिक दिन
आँखि भरल-भरल ई मौसिमक रिन
बाँहि टिकल गमला पर छल
कानो तँ जंगल-जंगल
इन्नरधनुष पहिले पहिल
उतरल छल पैर-पैदल
आबि गेल चैताक दिन
आबि गेल बैसाख-दिन
लागल जेना भागल सोनक हरिन
पहिलुक गुलाब लाले लाल
हिलय बंसी संगे ताल
पछिया नहि सुनय अछि बात
खोलि सपनाकेर जाल
आबि गेल जूहीक दिन

आबि गेल बेलाक दिन
कतेक अछि सहज आ संगहि कठिन
होरीक दशहराक भोर
हिलाबी तँ उठय हिलोर
आध अहाँके आध हमर
बहल कतेक रास लोर
आबि गेल नीनके दिन
आयल उदासीके दिन
गीतक पाँती केओ ल जाय छिन

●

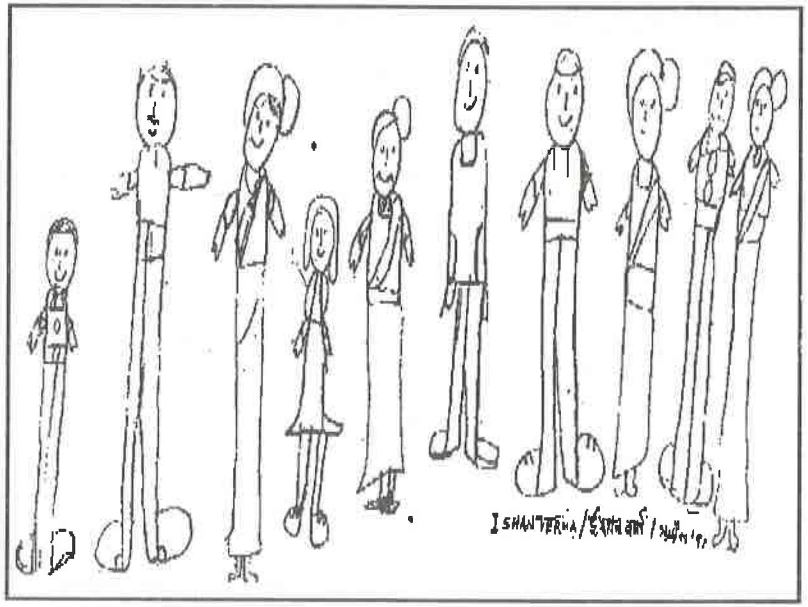

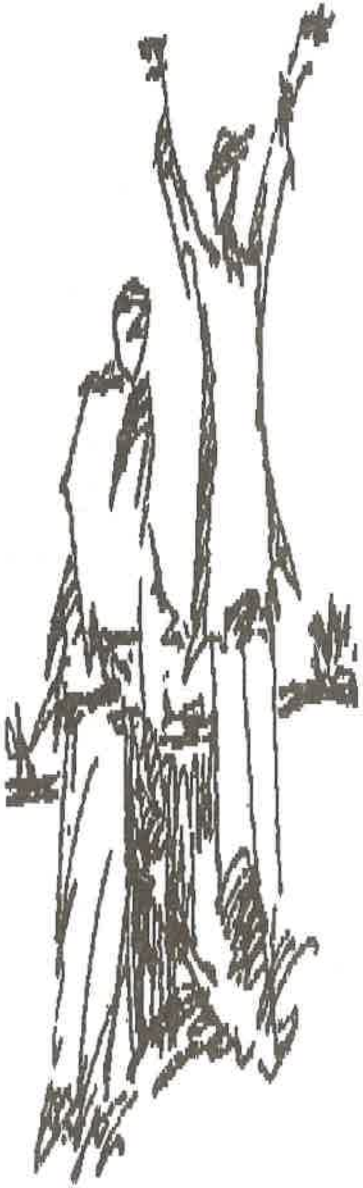

भीजल मुस्कान

नदी-किनार लागल हरिनीकेँ बान
नदीक संग-संग मौसम छल
मेघक पहरा आ चौदिस जल
कंठ पियासल ताकय आकुल परान
माछक आँखि पाँखि तितलीके
दरपन छपल दाग टिकुलीके
खाली हाथे उदास वसन्तक कान
इन्नरधनुष कान्हपर टाँगल
सपनक खोंच मोन भरि कानल
सुख तँ लागल जहिना हो टूटल छान
हवा अतय मंजीर बजाबय
बीतल छन आसंग जगाबय
ठोर तँ पहिरने अछि भीजल मुसकान

●

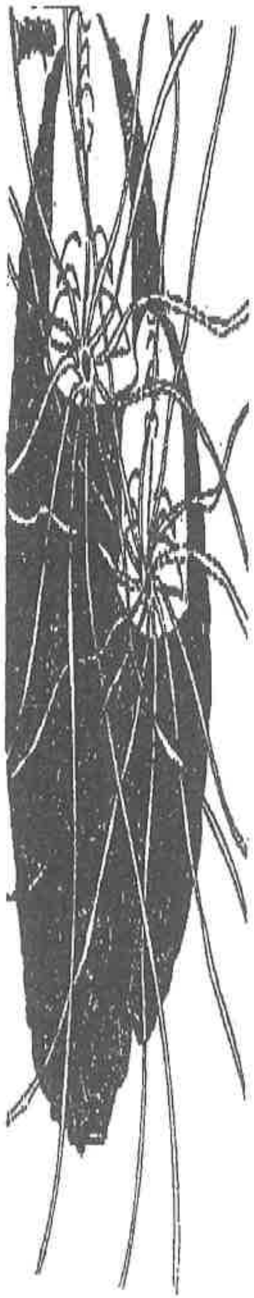

इजोतक अन्हार

इजोतक अन्हार मे दबल ई शहर
चुप-चुप कोनो आँच पीबि रहल अछि
आँखि मे भहरा गेल रेतक महल
चिरय पाँखि दबाके भागि रहल अछि
सब दिस पसरय चाहए अछि एक उदासी
चाहय अछि सूखि जाए लहरक कोमलता
नीन संग भय से बच्चाक आँखि मे पसरय
पीबि जाए लोकक मन मे उगल सेहन्ता
कोनो हाथ दिन दुपहर सरेआम
पखेरूक पाँखि कें नोचि रहल अछि
अनभुआर सन किछु बिछल अछि एतय-ओतय
मुरूछि गेल साँसक चिन्हल सुगंधक छाँह
हवा माथ पर आब कोना आंगुर फेरत
भीतरे-भीतर चटकि रहल कविताक बाँहि
मेटल पँखुरी मे रंगक सहज लहरि
फूल नहि अप्पन मधु बाँटि रहल अछि
बाट चलैत गली मे रौद नहि पछुवाबय
आब नहि पोरे-पोर हँसीक धार फूटय
भरल फागुन साँस गीत रहय गैरहाजिर
आँखिक असमान सँ सहज नीलरंग छूटय
बाट मे गाछ पहिर पातक जेवर
एके उदास गीत गाबि रहल अछि

माँजल हँसी

अहँक हाथक कंगन बनल रहितहुँ
जौं हम कनियों झुकल-मुड़ल रहितहुँ
चाकरी नहि केलहुँ कोनो हवेलीकेर
फूल नहि भेलहुँ कीमती गमलाके
नहि भेल आइ धरि जमीन पैरतर हमरा
माथ पर सुख कोनो टा दुमहलाके
भीतर सँ जे कतओ गिरल रहितहुँ
अपन कद सँ पैघ हम उठल रहितहुँ
खूब चालाक लोक आ दुनिया कहय जकरा
बात आओर वेवहारके कौशल
एक माँजल हँसी नहि कहियो हँसलहुँ
ठोर पर छल बसल उज्जर गंगाजल
बनि फूलो जँ आगाँ गिरल रहितहुँ
अहँक गेंठी मे सजल रहितहुँ
हम हवा छी रौद छी आ जेठक रोसनी
हमर हिस्सा मे लिखल अछि सिरिफ धाहे
अलग यात्रा पहिरब भरि पैर हम एहिना
घरक अलगनी नहि भए सकब चाहे
जूही सन आँखि मे उगल रहितहुँ
सुविधाक पैर सँ जँ चलल रहितहुँ

जिनगीक बात

फूलक नीलामीक कानून
आब नै बनाउ भायजी
जनता नै छै रोटी-नून
इहो समझि जाउ भायजी
आँखि मे अहाँके हम
कला एक देखैत छी
गरमा-गरम चर्चा मे
नाटको तँ खेलैत छी
भूख-बेकारीक मजमून
आब नै सजाउ भायजी
बेकारीके बात तँ
अहाँकेँ नीक न लगय
देशक खुशीक एहि सँ
कनियों टा छवि जँ बिगड़य
सिरिफ देबा लै सकून
बात नहि बनाउ भायजी
बाढ़ि भेजि नीन पड़ि गेलहुँ
उपजाउ खेतकेर नाम
भूखे मरैके अधिकारो—
बुनलहुँ अहाँ गामे गाम
जखमी हाथक छै ई खून
एकरा नै लजाउ भायजी
जिनगीक बात आब हैत
लोक सभ जानि गेल छै
चिरैयक छोट आँखि देखि
अर्जुनके बान भेल छै
सपना नहि हो कहियो सून
खेत मे उगाउ भायजी

●

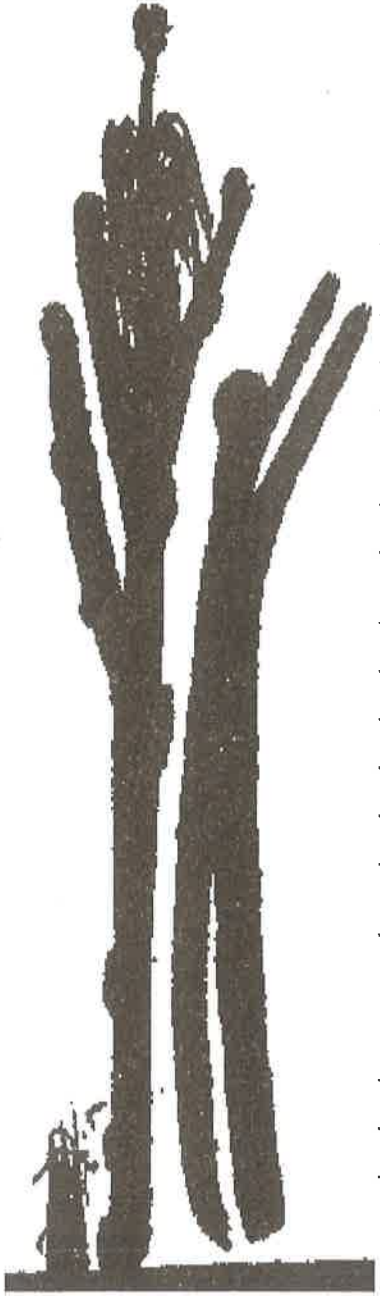

बच्चाक हँसी

प्रार्थनाकेर आखर जँका अछि झुकल
लोक-वेद आ गाछ-पातक जिनगी
कोय घटना जनम आब लेते करत
दूरि भए जाएत अन्हारक सदी

समय नहि छैक ई सोचैक लेल
कोना समाएल अन्हार फूल मे
कोना परय चाबुक हड़ताल पर
आ बहैछ लहू रसताक धूरि मे
ढहलो जा रहलय अछि जिनगीक किला
दूखल उदास मन सँ हाथक वन्दगी

सपनाक कंठ केँ घोंटि दए जे
चलू संग तलाशू ओहि हाथ केँ
मुखबिरी करय आ रहय बीच मे
मुँह चीन्ह मेटू ओकर बात केँ
एहि स्याह भूमिकाक अंतके बिना
पानि साफ कतहु नहि देत ई नदी

बच्चाक हँसी बजत मायक नीन सँ
आ बच्चाक नीन मे हँसत रोसनी
अन्हार कोखि सँ फुटत किरिनक आखर
बिछा देत बाध बोन लाल आसनी
फूल-पात मे वसन्त आयत एना
हँसत घाट-बाट छीटि कए हरदी

●

शांति सुमन के चुने हुए
101 गीतों का संग्रह
पंख-पंख आसमान

चयन एवं सम्पादन
नचिकेता

अभिधा प्रकाशन
रामदयालु नगर, मुजफ्फरपुर-842002

सम्बंधक व्यथा, विभिन्न समाजार्थिक कुचक्र मे फँसल दु:स्वप्न कें जीबैत निश्छल मन आ अन्तत: आँखि मे आशाक महाज्वार लेने जिनगीक विश्वासक यथार्थ एहि गीत सभक अंतर्वस्तु बनल अछि ।

शान्ति सुमनक ई गीत सभ अपन परिवेशक आतंक, गतिरोध आ संवेदना कें यथार्थ रूप मे चित्रित करैत विचारक प्रतिबद्धता सँ सेहो जुड़ल लगैत अछि ।

देशक व्यापकं जन-समूह किसान-मजूर आ निम्न मध्यवर्गीय सामाजिक-राजनीतिक चेतनाकें **शान्ति सुमनक** गीत मे सार्थक अभिव्यक्ति भेटल अछि ।

शान्ति सुमन 'हिन्दी नवगीतक एकमात्र कवयित्री' आ जनवादी गीतक सशक्त रचनाकार छथि । ओ नवगीत सँ अपन यात्रा शुरू कए जनवादी गीतक दौर मे अपन प्रमुख स्थान बनेने छथि । हिन्दीक समानान्तर शान्ति सुमनक मैथिली गीत मे निम्नमध्य वर्गक घर-परिवारक अनुभवक संग सामाजिक संघर्ष आ ओकर व्यापक सरोकार कें जन-जीवन सँ जोड़ैक सार्थक पहल भेल अछि । मैथिली गीत मे अपन सशक्त हिस्सेदारीक लेल **शान्ति सुमनक** महत्त्व अलग सँ विचारणीय अछि ।

Scanned by CamScanner